RNI NO. DELHIN/2012/47450

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

मासिक
साहित्य पत्रिका

जून 2024

कवितावली

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

मासिक
साहित्य पत्रिका

कवितावली

भारत

ग्रेट ब्रिटेन

इंडोनेशिया

अमेरिका

राजीव निशाना
समूह संपादक

सुरेश पुष्पाकर
मुख्य संपादक

प्रेम विज
संयुक्त संपादक

संतोष गर्ग 'तोष'
उप संपादक

डॉ. जसप्रीत कौर फलक
सह संपादक

राजीव निशाना
समूह संपादक

धन्यवाद संदेश

'समाचार वार्ता' द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित हिन्दी साहित्य पत्रिका 'कवितावली' के जून अंक में आप सभी सुधीजनों का अभिवादन है। राष्ट्र भाषा हिन्दी में साहित्य सृजन कर रहे सभी कवियों, साहित्यकारों, विद्वतजनों की संवेदनाओं को इस पत्रिका के माध्यम से संकलित करने का प्रयास किया गया है। इसमें जहाँ नये क़लमकारों ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की हैं, वहीं जानी पहचानी हस्तियों ने भी इसमें अपना योगदान दिया है। इसके लिए आप सभी साहित्यकारों का धन्यवाद करता हूँ।

यह पत्रिका अपने तीसरे अंक तक का सफ़र तय करके अपनी पहचान बना कर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना परचम लहराने में सफलता की ओर अग्रसर है। इस नेक कार्य के लिए मैं पत्रिका के मुख्य सम्पादक श्री सुरेश पुष्पाकर जो अपने वतन से दूर अपनी भाषा, अपनी पहचान एवं अपनी चित्रकारी द्वारा बेहद सुसज्जित तरीक़े से पत्रिका को पाठक वर्ग के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं, उनका हार्दिक धन्यवाद करते हुए साथ ही संयुक्त संपादक माननीय प्रेम विज, उप सम्पादक श्रीमति संतोष गर्ग 'तोष', डॉ० जसप्रीत कौर फ़लक एवं समस्त सम्पादकीय मण्डल का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका को अपनी सूक्ष्म दृष्टि से सफल बनाने का प्रयास किया है।

आपका भवदीय

राजीव निशाना

समूह संपादक

सुरेश पुष्पाकर
मुख्य संपादक

संपादक की कलम से

प्राचीन भारतीय साहित्य में भारतीय उपमहाद्वीप की संस्कृति, इतिहास और दर्शन के बारे में प्रचुर ज्ञान है। इसमें महाकाव्य कविताओं, धार्मिक ग्रंथों और दार्शनिक ग्रंथों सहित शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

इन प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन प्राचीन भारतीय समाज की मान्यताओं, मूल्यों और परंपराओं में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। इसके अतिरिक्त, इन साहित्यिक कृतियों का बाद के भारतीय साहित्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है और आज भी इनका अध्ययन और सराहना जारी है।

कवितावली पत्रिका के माध्यम से हमारा यह प्रयास है कि हमारी भावी पीढ़ी हमारी इस विरासत को लेकर अग्रसर हो तथापि हम कवियों एवम् साहित्यकारों पर यह जिम्मेवारी अधिक बढ़ जाती है, कि हम उनकी प्रेरणा का स्रोत बन कर उन्हें भारतीय साहित्य के मूल्यों के प्रति जागृत करें।

यह बात साझा करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि विश्व भर से आप सभी कवियों एवम् साहित्यकारों का पूर्ण सहयोग तथा समर्थन प्राप्त हो रहा है। कवितावली पत्रिका जून अंक में प्रकाशित प्रत्येक रचना अपने आप में उत्कृष्ट हैं। इसके लिए सभी कवि एवम् साहित्यकार बधाई के पात्र हैं।

आपका भवदीय
सुरेश पुष्पाकर
मुख्य संपादक

पत्रिका यूनाइटेड किंगडम में डिज़ाइन की गई है

क्र. सं	कवि एवं साहित्यकार नाम	स्थान	पृष्ठ संख्या
01	योगिता शर्मा	...इंडोनेशिया	06
02	सुषमा मल्होत्रा	...न्यू यॉर्क, अमेरिका	07
03	कशिश होशियारपुरी	...शिकागो, अमेरिका	08
04	आस्था नवल	...वर्जीनिया, अमेरिका	09
05	अनुराधा चन्दर	...न्यू यॉर्क, अमेरिका	10
06	सुरेश पुष्पाकर	...लीसेस्टर, इंग्लैण्ड	11
07	आचार्य राजेश कुमार	...ग्रेटर नोएडा, उ.प्र.	12
08	रणविजय राव	...दिल्ली	13
09	प्रो. गुरदीप 'गुल' धीर	...चण्डीगढ़	14
10	सुभाष शर्मा	...चण्डीगढ़	15
11	अमरजीत अमर	...चण्डीगढ़	16
12	डॉ० रामनिवास 'मानव'	...नारनौल, हरियाणा	17
13	राजेश 'पंकज'	...ग्रेटर मोहाली, पंजाब	18
14	डॉ० कमला तामाङ	...मिरिक, दार्जीलिङ	19
15	रूपा तामाङ	...सिक्किम, भारत	20
16	निधि मलिक	...फरीदाबाद, हरियाणा	21
17	राशि श्रीवास्तव	...चण्डीगढ़	22
18	धीरजा शर्मा	...चण्डीगढ़	23
19	अलका कांसरा	...चण्डीगढ	24
20	सुदेश मोदगिल नूर	...पंचकूला, हरियाणा	25
21	किरण गर्ग मुग्ध	...पटियाला, पंजाब	26
22	डॉ० उषा लाल	...कुरुक्षेत्र, भारत	27
23	संतोष गर्ग "तोष"	...पंचकूला, हरियाणा	28
24	पालम सैनी	...गाज़ियाबाद, उ.प्र.	29
25	बाल कृष्ण गुप्ता "सागर"	...पंचकूला, हरियाणा	30
26	सतवंत कौर गोगी गिल	...चण्डीगढ	31
27	रेखा मित्तल	...चण्डीगढ	32
28	'सागर' सूद संजय	...पटियाला, पंजाब	33
29	कृष्णा गोयल	...पंचकूला, हरियाणा	34
30	डॉ० जवाहर धीर	...फगवाड़ा, पंजाब	35
31	डॉ० प्रज्ञा शारदा	...चण्डीगढ़	36
32	तरुणा पुंडीर "तरुनिल"	...दिल्ली	37
33	हरेन्द्र सिन्हा	...चण्डीगढ़	38
34	शैली विज	...चण्डीगढ़	39
35	इंदु वर्षा	...पंचकूला, हरियाणा	40
36	बिजेंद्र सिंह चौहान	...ग्रेटर मोहाली, पंजाब	41
37	लिली स्वर्ण	...चण्डीगढ़	42
38	रमेश कुमार संतोष	...अमृतसर, भारत	43
39	निर्मल सूद	...चण्डीगढ	44
40	गीता मंजरी मिश्र "सतपथी"	...दिल्ली	45
41	राजेश भाटिया	...ग्रेटर मोहाली, पंजाब	46
42	विजय कपूर	...चण्डीगढ़	47
43	डॉ० जसप्रीत कौर फ़लक	...लुधियाना, पंजाब	48
44	विजय कुमार	...अम्बाला छावनी, हरियाणा	49
45	डॉ० उमा त्रिलोक	...ग्रेटर मोहाली, पंजाब	50
46	विमला गुगलानी	...चण्डीगढ़	51
47	डॉ० उमा शर्मा	...ग्रेटर मोहाली, पंजाब	52
48	साहिल	...दिल्ली	53
49	डॉ० गीता गंगोत्री	...झारखण्ड	54
50	डॉ० निशा भार्गव	...चण्डीगढ़	55
51	निर्लेप होरा	...दिल्ली	56
52	प्रेम विज	...चण्डीगढ़	57

समाचार वार्ता

सिमरूं मैं राम नाम दिन रैन

राम सहारा है जन-जन का,
भजूँ मैं राम नाम का मनका
राम ही पालन हार है सबका,
राम नाम से मिलता चैन,
सिमरूं मैं राम नाम दिन रैन ।

राम नाम में चारों धाम,
राम सर्वव्यापी ,सर्वशक्तिमान,
रोम रोम मे बसा है राम,
राम नाम से मिलता चैन,
सिमरूं मैं राम नाम दिन रैन ।

विषम, विपदा,दुख जब छाये
अंधकार से मन घबरायें,
राम लगाता नैया पार,
राम नाम से मिलता चैन,
सिमरूं मैं राम नाम दिन रैन ।

राम नाम है मंगलकारक,
राम नाम है परम सुखदायक,
राम नाम है सदा सहायक,
राम नाम से मिलता चैन,
सिमरूं मैं राम नाम दिन रैन ।

अमृत, पावन ज्योति राम,
मन मंदिर मे बसे हैं राम,
जीवन का आधार हैं राम,
राम नाम से मिलता चैन,
सिमरूं मैं राम नाम दिन रैन ।

सिमरूं मैं राम नाम दिन रैन,
राम नाम से मिलता चैन ।

योगिता शर्मा

इंडोनेशिया

समाचार वार्ता

काल्पनिक विश्वास

सुषमा मल्होत्रा

न्यू यॉर्क, अमेरिका

जब सूरज उतरे आँगन में
नजरें घूमें सारे परिवेश में
तुम्हारा किसी रूप में आना तो बनता है ।

किरणें जल पर मचल उठें
जल में हलचल मच जाये
तुम्हारे आने का बहाना बनता है ।

कलियों ने भी जब परदे हटा
झाँका होगा बाहर तो
ले मकरंद तुम्हारा आना बनता है ।

चप्पू की हो चाप कहीं
अकेले में ढूंढे साथ कोई
पार लगाने नाव को तुम्हारा आना बनता है ।

मद्धम गति हो जब पवन की
सांसों में घुलती अनंत शांति
उस पल मौसम सुहाना लगता है ।

दूर क्षितिज में ढके लालिमा
पर्वत की चोटी पर प्रतिबिम्ब गिरे
उसी दृश्य से मन बहलाना पड़ता है ।

झूठ को पहना कर सच की चादर
मन में उठते हैं गुबार कई
मिथ्या को झुठलाना पड़ता है ।

जन्म लेकर इस धरा पर
मंज़िल पर पहुंचने से पहले
कई बार आना और जाना पड़ता है ।

"निर्मल रोशन" संग जीवन मेरा
महका था जिन खुशबुओं से
सारे जग में उन्हें फैलाना बनता है ।

एक अभिव्यक्ति

उदय हुए तुम और अँधेरा छटा
अब कोई भी जल्दी न मचाना
धीरे धीरे चल कर प्रकाश फैला कर
मन की खुशी को करना एकत्रित
अस्त होने से पहले मुझे
थोड़ी सी धूप देकर जाना

तुम्हारे आने पर सुनाई पड़ती हैं
मेरे आँगन में किलकारियां
फूल तो खिलते ही हैं
खिल आती है कई कलियाँ
उनके नन्हें जीवन के लिए
थोड़ी सी और धूप देकर जाना

सुरमई आसमान के होते ही
उसमें चमकने लगते हैं सितारे
पूरे आसमान को स्याह होने तक
तुम वहीं ठहरे ही रहना
फैला कर हाथ खड़ी हूँ
चांदनी में है समां चमकाना
सब को है अभी मुस्काना
थोड़ी सी धूप दे कर जाना

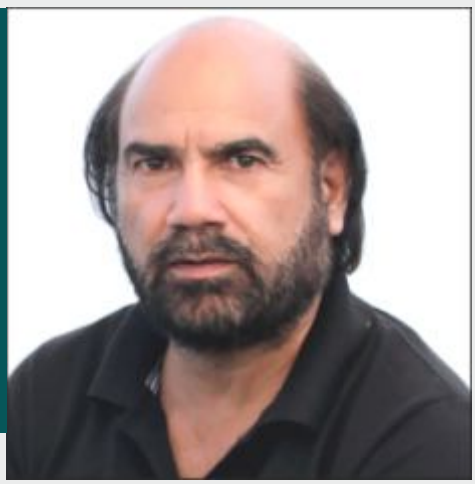

कशिश होशियारपुरी

शिकागो, अमेरिका

ज़िन्दगी से मेरा रिश्ता भी ग़ज़ल जैसा है
हर गुज़रता हुआ लम्हा भी ग़ज़ल जैसा है

आज कल लफ़्ज़ मुख़्वत पे उतर आये हैं
आज कल रंग-ए-तमन्ना भी ग़ज़ल जैसा है

झील सी आँखें, कमल होंठ, गुलाबी आरिज़
मेरे महबूब का चेहरा भी ग़ज़ल जैसा है

इस के हर मोड़ पे यादों के हसीं मंज़र हैं
यह महकता हुआ रस्ता भी ग़ज़ल जैसा है

हर कोई चीज़ है तरतीब में मिसरों की तरह
तेरी दुनिया का यह नक़्शा भी ग़ज़ल जैसा है

फ़िक्र-ओ-अहसास का दरिया जो नज़र आता है
यह हक़ीक़त है यह गहरा भी ग़ज़ल जैसा है

जिस ने भी इश्क़ किया है उसे मालूम है यह
हिज्र में दश्त भी सहरा भी ग़ज़ल जैसा है

इस में दरिया सी रवानी है बहुत पहलू हैं
यह मेरे इश्क़ का क़िस्सा भी ग़ज़ल जैसा है

यह किसी ख़ास ही लम्हे की दुआ है कि 'कशिश'
नाम उस ने मेरा रक्खा भी ग़ज़ल जैसा है

जब सख़्त मुशकिलात से दो चार हो गये
हम ज़िन्दगी के और वफ़ादार हो गये

सूरज का साथ देने में नुक़्सान यह हुआ
हम रात की नज़र में गुनाहगार हो गये

आँगन में इक ग़रीब सा मेहमान देख कर
घर वाले जान-बूझ के बीमार हो गये

यह खेल आरज़ूओं का कुछ दिन बुरा लगा
फिर यूँ हुआ कि हम भी अदाकार हो गये

मुझ को मज़ाक़ करते हैं वो लोग आज कल
मेरी किताबें पढ़ के जो हुशियार हो गये

इस बार मेरे पास मुहब्बत की ढाल थी
इस बार उस के तीर भी बेकार हो गये

हम को यहाँ तक आने में बरसों लगे 'कशिश'
कुछ लोग एक रात में फ़नकार हो गये

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

नयी नारी नयी कहानी

आस्था नवल

वर्जीनिया, अमेरिका

तुम मेरी आँखों में डूबने की बात करो या नहीं
कोई बात नहीं,
पर अगर आँखों में छिपे भाव को पढ़ पाओ
तो कोई बात बने ।
तुम मेरे चेहरे को चाँद में ढूँढ़ो या नहीं
कोई बात नहीं,
अगर चेहरे पे आई शिकन को मिटा सको
तो कोई बात बने ।
तुम राहों में सितारों को बिछाओ या नहीं
कोई बात नहीं,
अगर राह में मेरा हाथ थामे रखो
तो हमराह बने ।
मुझपे मर मिटने की बातें तुम न ही करो
यदि जीवन मेरे नाम लिखो
तो हमराह बने ।
बहुत सुन लीं चाँद सितारों और सोने चाँदी की बातें
अब कोई याथार्थ की बात करो
तो कोई बात बने ।
मैं अब इतनी भी अधीन नहीं कि
आसरे के लिए प्यार करूँ
मेरे साथ, मुझे बिना बदले जी सको
तो हमराह बने ।
अधिकार नहीं, प्यार करो तो कोई बात बने ।
स्वामी नहीं, साथी बनो तो कोई बात बने ।
तन नहीं, आत्मा को छू पाओ तो कोई बात बने ।
तो ही हमराह बनें, साथ रहें
तो कोई बात बने ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

ये नारियाँ

अनुराधा चन्दर

न्यू यॉर्क, अमेरिका

जीवन के हर पन्नो पर लिखी
हर शब्दों में ढली
हर रंगो के एहसासों में लिखी
वक्त के हर इशारों पर चली
ये नारियाँ
कहीं दुःखमय छंद तो कभी
सुखमय काव्य बन
पूरी लाजवाब कहानी बनी
ये नारियाँ
कई बार उनके उसूलों के व्याकरण भी बदले
कई बार रिस्तों में प्रेम की परिभाषा भी बदले
मगर जीवन के हर अर्थ में
वो खरी उतरी
ये नारियाँ
जीवन में हर एक उलझे प्रश्न का जवाब है
ये नारियाँ
अपनी विपदाओंको भी कोरे पन्नो पर
उतारकर काव्य रच डाले
कई अंकों में लाजवाब है
ये नारियाँ
पढ़ना कभी उसे फुर्सत में –
पाओगे उसे-तुम अपनी ही तन्हाईओं में
समझना-उसे तुम अपनी गहराईओं में
गागर है वो ममता का
हृदय में दमकती हुई महताब
ये नारियाँ !

"नारी"

नारी शक्ति के सम्मान में समर्पित

हर चमन में फूल बिखेर दें वो खुशनुमा
है नारियाँ !
प्रेम में सब कुछ लुटा दें ऐसी जुदा
है नारियाँ
ग़म हो या खुशी हर हाल में वो साथ दें
हाथ उनके जब भी उठे देती दुआएँ
है नारियाँ !
ज़िंदगी गमगीत हो तो भी ये साथ छोड़े
नहीं
हर ज़ख्म पर मरहम लगा दें ये दवा
है नारियाँ !

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

पत्थर और कोयला

सुरेश पुष्पाकर

ग्रेट ब्रिटेन

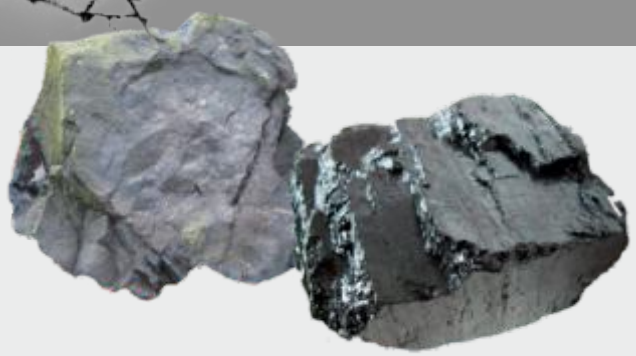

(एक व्यथा - लघुकथा)

कभी मैं भी पर्वतों की बुलंदी पर रहकर बादलों को छूता था। कभी मुझे भी मद मस्त पवन के झोंके सहलाया करते थे। मुझमें भी कभी विशालता का अंश होने का एहसास था। मेरी ही बनी कंदराओं ने मानव जाति को सबसे पहले आश्रय दिया।

मुझे, मेरे वजूद से तोड़ा गया। मेरी पहचान पर्वत या चट्टान को मिटाकर पत्थर बनाया गया। यहीं मेरा अन्त नहीं, मुझे अभी और तोड़ा जाना है, मेरे टुकड़े-टुकड़े कर मानव द्वारा चलने के लिए बनाए जाने वाली राहों पर बिछाया जाना है। अपने पाँव तले रौंद कर मुझे मानव कहेगा मैं उसकी प्रगति का हिस्सा बन गया।

एक खदान से निकाले गये कोयले से अपनी व्यथा कहते-कहते पत्थर भावुक हो गया।

कोयले ने अपनी नम आँखों से पत्थर की तरफ देखा और लगभग ढांढ्स बंधाते हुए पत्थर से कहने लगा, तुमसे भी अधिक दुर्गति मेरी होने वाली है। धरती के गर्भ में चैन से मैं सोया हुआ था। मुझे खोद कर निकाला गया। मेरे भी टुकड़े-टुकड़े कर मुझे जलाया जायेगा, मुझसे उपजी ऊर्जा से संचालित होंगे मानव निर्मित उसके विकास में भागीदार कल-पुर्जे। मेरा पूर्णतया अस्तित्व मिटा दिया जायेगा।

शापित है यह मानव मुझ द्वारा कि यह खुद पत्थर दिल हो जायेगा, यह कहते-कहते पत्थर भाव विभोर हो गया। कोयले ने भी पत्थर की बात को स्वीकार्यता देते हुए कहा मेरा वजूद मिटाने वाले मानव को मेरे रंग का असर होगा, इसका मन काला यहाँ तक कि कभी-कभी चेहरा भी मेरे ही रंग से रंगा जायेगा।

फिर पत्थर और कोयला दोनों ही एक दूसरे की तरफ देखते रहे, अपने-अपने अस्तित्व के मिटने के इन्तज़ार में।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

प्यार की दुकान

आचार्य राजेश कुमार

नोएडा, भारत

नफ़रत के बाज़ार में
मोहब्बत की दुकान लगाई है
धर्म जात पंथ सब अधर है
यहाँ तो मनुष्यता से आशनाई है ।
खुदगर्ज़ी, छोटा दिल, कृपणता
नहीं है यहाँ, दिल की
उदारता ने खुशी से
सबको आवाज़ लगाई है ।
सबका स्वागत है दुकान पर
क्योंकि सब अपने भाई हैं
आपस में न लड़वाने की
हमने तो कसम खाई है ।
बम, लाठी, बल्लम, खंजर
यहाँ नहीं मिलेंगे तुमको
प्रेम के धागे हैं कोमल
इनहें खींचने की मनाही है ।
कड़वा, कसैला, तीता, तीखा
कुछ हम नहीं रखते हैं
हमारे पास तो बहुत खास
अपनेपन की मिठाई है ।
झूठ, फरेब, धोखा, ईर्षा
हमसे मत माँगो तुम
जिस्म को अब छोड़ चलो
हमने रूह की आवाज़ उठाई है ।

नेह बंधन

मैंने बाँध लिया है तुमको
प्यार के नाजुक धागों से
जितना तुम बंधते हो मुझसे
मैं बंधता उससे आगे ।
बंधन जो है मुक्त कर रहा
हमको अपने रागों से
पंख लग गए हों ज्यों आकर
मन नभ विचरण में भागे ।

किसके संकेतों से झरती
प्रेम किरण उस अंबर से
बेड़ी टूट रही माया की
चिरनिद्रा से ज्यों जागे ।
मोह नहीं रोके कदमों को
अब घुँघरू का लोभ नहीं
अब ज़मीं पर नहीं पैर हैं
उसकी धुन पर मन नाचे ॥

समाचार वार्ता

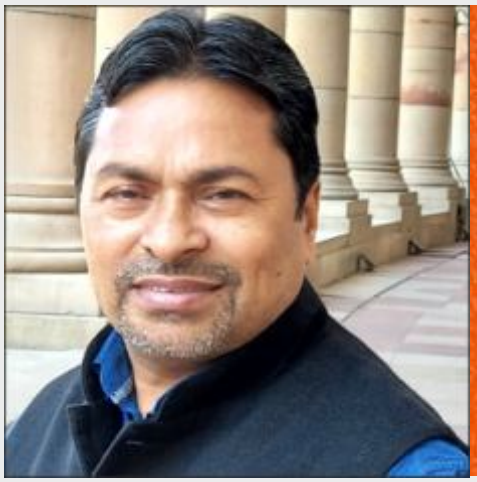

यह बसंत है

रणविजय राव

दिल्ली, भारत

चहुँ ओर
खिले हैं फूल
बाग में
बगीचे में
क्यारियों में
गमलों में
वैसे ही खिली हो
तुम भी ।

बैठो तो जरा
खींच लूं तुम्हारी
एक तस्वीर
खिले गुलाब के साथ
बना सको जिसे
अपना डीपी ।

अरे ! देखो...
एक भंवरा भी
मंडरा रहा है उस पर
ले रहा हो मानो
मौसम का स्वाद ।

मेरा कवि मन भी
मंडरा रहा है तुम पर
भंवरा बन
जैसे भंवरा भी बांचने लगा है
मेरी कविता
जो लिखी है मैंने
तुम्हारे ऊपर

यह बसंत है
कुछ भी हो सकता है ।

बोलती आंखें

रोटी बेलती हुई
उसने पूछा जब
'अजी... सुनते हो...
सब्जी कैसी बनी है --
जरा चख कर बताना ।'

मैंने कहा --
बिलकुल तुम्हारी तरह
तीखी और चटपटी ।

मेरी किसी भी बात को
जो जमीन पर न उतरने देती
इस बार वह चुप रही
लब सिले थे
पर
आंखें बोल रही थीं
जैसे कह रही हो
एक तुम ही तो हो
बढ़ जाता है
जिससे स्वाद
सब्जी में भी
और जिंदगी में भी ।

प्रो. गुरदीप 'गुल' धीर

चण्डीगढ़, भारत

'गुल' साहिबा की कलम से

तेरी कुरबत से ही जज़्बात पे रानाई है
वरना यह ज़िंदगी एक उम्र की तन्हाई है

एक खला सी है जिधर भी मैं उठाउं नज़रें
जाने किस जुर्म की यह मैंने सज़ा पाई है

चोट खाकर भी देता जो है जीने की दुआ
यह कोई और नहीं आपका सौदाई है

कैसे हो हिजर् के सहरा पै वस्ल की बारिश
कभी क्या काली घटा लेके बाहर आई है

बेरुखी का उन्हें इल्ज़ाम नहीं दे सकते
'गुल' नें तकदीर में लिखी हुई शै पाई है

उदासी के कोहरे से लिपटा है बदन मेरा
मेरे वजूद ने चादर ग़मों की ओढ़ी है

हिजर् की रात लंबी है बहुत लंबी है
ज़िंदगी प्यार की थोड़ी है बहुत थोड़ी है

दूर तक भी नहीं साहिल की कोई परछाई
कैसे मंझधार में कश्ती मेरी, ला छोड़ी है

कुछ टूट गया है फिर भी बंधा है कुछ
किस अदा से तूने रिश्ते की डोर तोड़ी है

कोई हंसी कोई खुशी पहुंचती ही नहीं
संगरेज़ों ने यह दीवार कैसी जोड़ी है

अब अकेले हैं शशोपंज दोराहे का लिए
कौन से मोड़ पै 'गुल' तूने डगर मोड़ी है

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

वर्दी

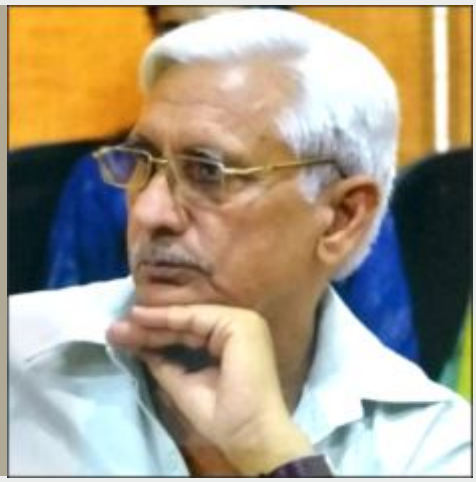

लघु कथा

सुभाष शर्मा

चण्डीगढ़, भारत

वह ऊचां-लम्बा सरू जैसा जवान था । चाहे वह चालीस के पार पहुंच चुका था परन्तु वह अपनी उम्र को छुपाता था और अभी तीस से भी कम का लगता था।

- साहब जी मुझे छुटी दे दो । मैं घर जाना चाहता हूँ।

और वह फौजी अपने साहब के आगे गिड़गड़ाए जा रहा था। उसने मौका देख कर साहब के घर जा कर ही बात करनी ठीक समझी थी। साहब अपनी कोठी के लॉन में बैठा अपने बच्चों के साथ खेल रहा था।

- हूँ -------।

साहब ने बस इतना ही कहा और उसकी ओर गौर से देखा।

- साहब जी बार-बार बच्चों और पत्नी के पत्र आते हैं। हर बार आने के लिए कहते हैं, साहब जी। साहब जी उनका कहना है की जब से मैं फ्रंट पर गया हूँ, एक बार भी मिलने नहीं आया हूँ। साहब जी जब भी मैं लिखता हूँ कि मैं बिलकुल ठीक हूँ तो वह लोग हर बार कहते हैं कि मैं झूठ बोल रहा हूँ, हमारा दिल कहता है की तुम किसी मुसीबत में हो। ------।

और आंसू उस की बातों के साथ उस की गालों से बहते जा रहे थे।

- तुम पहले कब छुटी गए थे ?

- तकरीबन दो-तीन साल पहले साहब जी।

- यूनिट में कहा था ?

- कहा था साहब जी। कई बार कहा था। परन्तु हर बार मेरी दरखास्त न - मंजूर हो जाती है साहब जी। साहब, इसीलिए हम आपको मिलने आया हूँ साहब जी। ---------।

- मिल जाएगी, यूनिट में बोल दूँगा।

- बहुत-बहुत धन्यवाद साहब जी। परमात्मा आपको तरक्की दे साहब जी। भगवान आपके बच्चों की उम्र लम्बी करे।

और उसने अपनी आंखें पोंछते हुए बहुत सारी दुआएं दे डालीं।

- लेकिन जवान ?

- हाँ साहब जी।

- जवान साहब के पास वर्दी पहन कर क्यों नहीं आया ?

वर्दी नाम सुनते ही वह तन गया। एक दम सीधा हो कर, सावधान की हालत में - छाती छे इंच आगे और पेट पीछे - वाले काशन के अनुसार खड़ा होकर कहने लगा - साहब जी जब वर्दी पहन लेता है तो हम सिपाही बन जाता है। ---- और साहब जी। सिपाही रोता नहीं है ----------गिड़गड़ाता नहीं है -------बस हुक्म मानता है ------- लड़ता है। -----या जीतता है ----या शहीद हो जाता है ----।

अमरजीत अमर

चण्डीगढ़, भारत

ग़ज़लें मेरे ज़ेहन से

आज धोखा है कहीं तो डर कहीं
है मुसीबत ही मुसीबत हर कहीं ।

आसमां तक आग है रोको उसे
जल ना जाएँ आज उसके पर कहीं ।

भीड़ आख़िर किस लिए ख़ामोश है
हाथ में इसके ना हो पत्थर कहीं ।

चटक जाते हैं दिलों के आइने
टूटता है जब कोई भीतर कहीं ।

हर नदी सदियों से बस बेचैन है
देखता है रास्ता सागर कहीं ।

घुटन है घर में, दिलों में, ज़ेहन में
आ चलें सब तोड़ कर बाहर कहीं ।

इन मकानों में ही गुम है दोस्तो
मेरा प्यारा शहर, मेरा घर कहीं ।

देखना इतिहास भी मिट जाएगा
मिट गया दुनिया से जब शायर कहीं ।

कभी कुछ पूछने का आपको अधिकार कब था
जिसे पूजा गया है वो खुदा साकार कब था ।

ना जाने कितनी सदियों से टिका है आस्था पर
जमीं जैसा कभी आकाश का आधार कब था ।

वो जो उसके लिए दिन रात रोया और तड़पा
उसे मिलने की ख़ातिर वो कभी बेज़ार कब था ।

वो अपने ही वचन की क़ैद में उलझा हुआ था
नहीं तो कर्ण सारे युद्ध में लाचार कब था ।

मिला है साथ जिसके शक्ल उस जैसी बना ली
कहीं पानी का भी अपना कोई किरदार कब था ।

तुम्हारे लौट आ जाने से लगता है हमेशा
गुलो गुलज़ार था मैं दोस्तो बीमार कब था ।

सुना है आज आई है उतर कर उसके घर में
नहीं तो आदमी वो धूप का हक़दार कब था ।

आयु भर मर मर कर जीने की प्रथा देखी नहीं
इससे बढ़कर और क्या होगी व्यथा देखी नहीं ।

बस कि पत्थर पूजने पर कर दिया दंडित हमें
कितनी गहरी थी हमारी आस्था देखी नहीं ।

जब सिफ़ारिश ही नहीं थी पास अपने दोस्तो
फिर किसी ने भी हमारी योग्यता देखी नहीं ।

आग ने निष्पक्षता से जब जला कर रख दिया
उसने जलती डिग्रियों की मान्यता देखी नहीं ।

जाति भाषा धर्म पर बिखरे मिले हैं सब मुझे
मैंने तो अब तक यहाँ पर एकता देखी नहीं ।

यूँ तो मिलते हैं परस्पर मुस्करा कर सब यहाँ
पर दिलों में कितनी होगी विषमता देखी नहीं ।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

दोहे मेरी कलम से

डॉ० रामनिवास 'मानव'

नारनौल, हरियाणा, भारत

आज बने इतिहास

मधुर कुंज, छाया घनी, और दृश्य अभिराम ।
मगर समय का 'पाहुना', कब करता विश्राम ॥

छूट गई अमराइयां, हुई छांव भी दूर ।
चलते-चलते आ गए, हम यह कहां हुजूर ॥

दौड़-दौड़कर तन थका, मन भी हुआ उदास ।
बुझे तो कैसे मृग की, मरीचिका से प्यास ॥

धीरे-धीरे सब गया, सुविधा का सामान ।
जीवन बनकर रह गया, जलता हुआ मकान ॥

कंचे, पन्नी, गुड़ियां, हंसी, खुशी, मुस्कान ।
वक्त छीनकर ले गया, कितना कुछ सामान ॥

एक-एक कर सब गए, क्या दुश्मन, क्या मीत ।
अब तो केवल शेष हैं, कुछ यादें, कुछ गीत ॥

कैसा वाद-विवाद अब, कैसा अब परिवाद ।
अब तो जीवन में बचा, है केवल अवसाद ॥

गया, देखते सब गया, हास, लास, उल्लास ।
कल तक हम भूगोल थे, आज बने इतिहास ॥

चाहत के फीके हुए, चटक चुटीले रंग ।
इसीलिए लगने लगे, सारे ढंग कुढंग ॥

कोई कहे खेल है, कोई समझे सौत ।
जीवन की अर्धांगिनी, लगे मुझे तो मौत ॥

सीता-सी संवेदना, व्याकुल और उदास ।
मन बैरागी राम-सा, जीवन है वनवास ॥

कैसा जीवन-राग

कुंठित है सब चेतना, लक्ष्यहीन संधान ।
टेक बने हैं देश की, अब बौने प्रतिमान ॥

नैतिकता नंगी हुई, बनी पाप की टेक ।
लक्ष्मण-रेखा अब यहां, बाकी बची न एक ॥

पूजित है अब नग्नता, धरा शीश पर ताज ।
लेकिन भटके अस्मिता, कौड़ी की मुहताज ॥

नंगा पूछे नंग से, असली नंगा कौन ।
सच दोनों के सामने, फिर भी उत्तर मौन ॥

भुतहा-भुतहा वक्त है, सहमी-सहमी आग ।
सन्नाटों के दौर में, कैसा जीवन-राग ॥

आहत-अपहृत रोशनी, अंधकार की कैद ।
खड़ी घेरकर आंधियां, पहरे पर मुस्तैद ॥

अभयारण्य आज बना, सारा भारत देश ।
संरक्षित शैतान हैं, संकट में दरवेश ॥

राजनीति करने लगी, अब तो स्यापा रोज ।
यार रुदाली के सभी, क्या गंगू, क्या भोज ॥

झूठ करे अठखेलियां, सत्य फिरे लाचार ।
पड़ी धर्म के बेड़ियां, गले पाप के हार ॥

समाचार वार्ता

आ ! धरा के ज्येष्ठ सुत

राजेश 'पंकज'

ग्रेटर मोहाली, भारत

आ ! धरा के ज्येष्ठ सुत,
हम करें सत्कार तेरा !
धूल में लथपथ हुआ तू,
पुष्प में तब गंध आई,
चैन से हम सो सके,
सीमा पर जागा तू भाई !
हम चलें संग दो कदम,
है मोड़ पर अगले सवेरा;
आ ! धरा के ज्येष्ठ सुत,
हम करें सत्कार तेरा----।

अन्न तो तब ही फलेगा,
स्वेद का जब मेह होगा,
दीप भी वह ही जलेगा,
श्रम का जिसमें स्नेह होगा,
तेज तेरा सूर्य सा है,
कैसे जी पाए अंधेरा;
आ ! धरा के ज्येष्ठ सुत,
हम करें सत्कार तेरा----।

हल तेरा और कलम मेरा,
उकेरें स्वर्ग वसुंधरा पर,
प्रेम की हम दुग्ध-सलिला,
खींच लाएंगे धरा पर,
तेरा लहू, तेरा पसीना,
तेरा श्रम श्रृंगार तेरा;
आ ! धरा के ज्येष्ठ सुत,
हम करें सत्कार तेरा----।

उंगलियाँ

राही को उसकी राह दिखाती हैं उंगलियाँ,
धरती पकड़ के राह बनाती हैं उंगलियां ।
दुनियां में जो आया हो कुछ रोज़ ही पहले,
उंगली को थाम रिश्ता बनाती हैं उंगलियाँ ।
डगमगाते पैरों खड़े होना और चलना,
अम्मा कभी बाबा की सिखाती हैं उंगलियाँ ।
वेद-पुराण या कुरआन या गीता से ग्रंथ हों,
कलम से पहला अंक लिखाती हैं उंगलियाँ ।
आंखों में धनक कानों में जल-तरंग की लहरें,
कच्ची उमर में जब भी छू जाती हैं उंगलियाँ ।
आंचल को बार-बार खींच अलकों को सवारें,
इक फूल थमा दिल को लुभाती हैं उंगलियाँ ।
पूरा गगन हँसा इक रंगोली छा गयी,
हल्दी हिना से हाथ सजाती हैं उंगलियाँ ।
फाल्गुन में भी सावन की बौछार रसभरी ,
गालों पे जब रंग लगाती हैं उंगलियाँ ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

बुद्ध तुम्हारा पुनः अवतरण

डॉ० कमला तामाङ

मिरिक, दार्जीलिङ, भारत

हिंसा की विकराल आग
निर्मम पग चला जा रहा है -
पूर्व से पश्चिम तक
उत्तर से दक्षिण तक
सर्वत्र-सर्वत्र
जल रही मानवता की लाश
बीच शहर
बीच महानगर के सड़क-सड़क
गली-गली
सर्वत्र-सर्वत्र !

मूक दर्शक बना बैठा है
राष्ट्रसंघ और मानवाधिकार के
हिमायती जमात ।
मानव सभ्यता को जड़ से ही
निर्मूल करने की प्रचेष्टा है
शायद बारूद के घर में ही
शरण ले रखा हो,
केवल रासायनिक अस्त्र की भाषा
समझते हैं, बोलते हैं,
निरपराध/निरीह लोगों के लाश पर
उत्सव मनाने वालों को
मानव-मूल्य अर्थहीन लगता है
केवल अपने वर्चस्व प्रमाणित करने
प्रतिस्पर्धा में जी रहे हैं ।

सभ्य कहलाने वाले मानव
लड़ रहे हैं अर्थहीन युद्ध,
ईश्वर को जलाकर आनंदित होने वाले
स्वार्थ की खेती करने वालों की भीड़
और चारों तरफ करूणा का अकाल ।

क्यों संसार संग्राम की आग में झुलस रहा ?
लगता है ...
तुम्हें फिर अवतरित होना होगा बुद्ध,
दया और करूणा के सुखाग्रस्त
मानव हृदय में
अहिंसा का पौध लगाने,
दिशाहीन विश्व समुदाय को
धर्म और अहिंसा का पाठ पढ़ाने
एक वैश्विक पाठशाला की स्थापना आवश्यक है
जहाँ मूर्खो को जलाने ज्ञान का सूरज निकले ।

अतः ...
बुद्ध तुम्हारी नितांत आवश्यकता है
इस युद्ध ही युद्ध व्याप्त विश्व में,
हिंसा के कोहरे में
मानव आकृति की पहचान
कठिन हो चला है,
इस विपदा के वक्त
अहिंसा बनने का सन्देश-पताका
इस प्रदूषित हवा में फहराने
बुद्ध तुम्हारा पुनः अवतरण
अपेक्षित है
यथार्थतः अपेक्षित है ॥

जीतने को लड़ाई जो छुप छुपा के लड़ रही हूं

रूपा तामाङ

सिक्किम, भारत

लोगों के इस घने जंगल में
शोरगुल को चीरते हुए
सूरज को तोड़ने का अदम्य साहस लेकर
मैं आगे बढ़ रही हूँ,
आजकल मैं घर के अंदर
छुपकर लड़ाई लड़ रही हूं ।

(डटकर, संघर्ष का सबक सीखकर आई जो थी,
मैं किस युद्ध की तैयारी कर रही थी ?)

आए दिन रिश्तेदारों की मौत का तमाशा
दूर से देखने की वाध्यता
जब सारे दर्द बयां करने के लिए शब्द नहीं हैं
मैं खुद से छिपने की कोशिश करती रहती हूँ,
दर्द की बौछार से लथपथ भीगी ।
कितना गड़बड़ है !
न पड़ोसी न रिश्तेदार ।

हम हवा में जहर कैसे घोलते हैं ?
कि हम अपनी नाक और मुंह ढककर
जीवित रहने की कोशिश कर रहे हैं ।

अपने आप में पृथक
अकेले अकेले
गुपचुप तरीके से लड़ी जाएगी ये लड़ाई,
अदृश्य शक्तिशाली शत्रु के विरुद्ध ।
(मेरा शहर इतना उज्ज्वल है
कि यह दिल दहला देने वाली खामोशी का
दिल दहला देने वाली चीख
मृत्यु को पुकार रही है ।)

हर बंद दरवाजे के अंदर
युद्ध लड़ने में सक्षम योद्धा नहीं होंगे ।
रूठ गए होंगे कई रसोइ घर !
उदास होंगे तेल और चावल के कई बर्तन,
हो सकता है कि नमक खट्टा हो गया हो ।

यद्यपि अधमरा,
अभाव के पेट को थमथमाते हुए
लड़ाई लड़ रहे हैं
जुगाड़ का सांस ले रहा है,
जीवित रहने के लिए ।

चारों ओर एक त्रास सा है,
पड़ोस में, मेहमान में,
अपने हाथों और उंगलियों पर ।
जब अपना हाथ अपना न लगे
कैद में रहने की यह मजबूरी ।
विकास की गति में
किस यात्रा पर
दुनिया निकली थी ?
कि अब हम एक गुप्त लड़ाई
जीतने की कोशिश कर रहे हैं ।

विकास के खेत में
कई योजनाओं की खेती की जा रही थी ।
चमचमाते विज्ञान के अनेक ज्ञान
कौन सी अज्ञानता के कारण चूक हुई ?
कि
हवा में,
पानी में,
हर किसी माहौल में
मनुष्य की मृत्यु खिल गई ।
यदि मौत से जीतना हो तो शायद,
दरवाजा बंद करो
लड़ाई जो छुप छुपा के लड़ रही हूं मैं ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

निधि मलिक

फ़रीदाबाद, भारत

अहसास

चाँद आता है कभी कभी,
झाँकता है मेरी खिड़की से ।
सराबोर कर जाता है
मेरा रोम रोम
चमकीली चाँदनी में भीग ।

अपने को चाँदी सा महसूस करती,
मुस्कुराती हूँ मन ही मन,
खो जाती हूँ चाँद के साथ,
दूर निश्छल गगन में
अनगिनत तारों के साथ ।

सच, वो रात बड़ी ख़ास होती है ।
जब चाँद मेरी खिड़की से झाँकता है ।
पूर्ण चाँद भर देता है पूर्णता मुझमें,
अपनी यात्रा का अहसास करा,
भर देता है विश्वास मुझमें ।
अमावस्या से पूर्णिमा,
यह अटूट यात्रा है ।
राही तू चलता चल,
चाँद तेरे साथ है ॥

व्यंजक

धरती को जाने बिना
चाँद को हमने छू लिया ।
इस धरा को बर्बाद कर
व्योम को हमने चीर दिया ।

स्वर्ग सरीखी वसुन्धरा का
कण-कण आज रो रहा है।
जल-थल-वायु, सभी को दूषित कर
आज मानस खुश हो रहा है

बाढ़, आग व पिघलते हिमखंड
सवाल बन कर खड़े हैं.
मानव तू नशे में है,
या सच से नाता तोड़ लिया है ?

अपने को जान, अपनों को जान
धरती को जान, जीवों को जान ।
बारूद के ढेर पर बैठी भूमि का रुदन सुन,
और सुन' अनगिनित मनुष्यों की चीत्कार

मनुष्यता को बचा - धरा को बचा
फिर गगन में परचम लहरा ।

समाचार वार्ता

नमन

राशि श्रीवास्तव

चण्डीगढ़, भारत

देश के वीर सिपाही तुमको, शत शत नमन हमारा है
तेरे लहू का हर कतरा, हमपे कर्ज़ तुम्हारा है

बहुत शीश है काट चुका, दुश्मन अपने जांबाज़ों का
अब बदला लेना होगा, हर एक ज़ख्म और घावों का

नमन करो उन वीरों को,जो देश की लाज बचाते हैं
हम घर में चैन से सोते हैं, वो सरहद पे गश्त लगाते हैं

रणभूमि में हर शत्रु को, चुन चुन कर मार गिराते हैं
फिर लौट के ना आने पाए, उसे अच्छा सबक सिखाते हैं

सर्दी गर्मी की फ़िक्र नहीं, ना होश है खाने पीने का
बस देश की रक्षा करना ही, ये अपना फ़र्ज़ बताते हैं

स्वार्थ लोभ लालच से दूर, ये सादा जीवन जीते हैं
परवाह नहीं अपनी कोई, बस देश पे जान लुटाते हैं

अबीर गुलाल रंगों से नहीं, दुश्मन के लहू से खेलते हैं
विजय मशालें जलाके ये, दीपावली मनाते हैं

रूखा सूखा खा लेते हैं, ऐशो-आराम की चाह नहीं
बंदूकों के साये में भी, हर जश्न ये दिल से मनाते हैं

देश की सरहद घर इनका, जाति का नाम सिपाही है
धर्म है राष्ट्र धर्म इनका, जयहिंद को शक्ति बताते हैं

ऊँच नीच का भेद नहीं, बस जुनूँ है देश पे मर मिटना
शत्रु के खेमे में भी ये, जन गण मन ही गाते हैं

एक सिपाही अकेला नहीं, बलिदानी उसके परिजन भी
पुत्र मोह से भी बढ़कर, वो देश पे जान लुटाते हैं

इन जैसा कोई निडर नहीं, इन जैसा कोई खुद्दार नहीं
मरते दम तक ये लड़ते हैं, सीने पर गोली खाते हैं

हम भी इन जैसे बन जाएँ, वीरों के गुण को अपनाएँ
बनें वीर और बलिदानी, देशभक्त हम बन जाएँ

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

धीरजा शर्मा

चण्डीगढ़, भारत

आओ अहं को परे रख दें
किसी ताक पर ।
पिघला दें बर्फ जैसे मौन को
संवादों की गर्मी से।
थोड़ा तुम बढ़ो थोड़ा मैं
और पहुंच जाएं वहीं पर
जहां से शुरुआत की थी ।
आओ, शिकवे शिकायतों को
फैंक दे किसी गमले में
डाल कर मिट्टी उन पर
बोयें एक बीज प्रेम का ॥
आओ, इस रिश्ते को फिर बुनें
दोनों मिल कर ।
उधड़े संबंधों में लगा डालें
पैबंद क्षमा का।
कड़वी बातों को भुला दें
किसी दुःस्वप्न सा ।
देखो ,ला रही हूं मैं
अपने साथ प्रेम की सुई ।
तुम भी मत भूलना
विश्वास का धागा लाना ।
हम मिल के थामेंगे
धागा और सुई ।
और कर देंगे
फटे रिश्तों में
प्रेम की तुरपाई ॥

बूढ़ी माई के बाल
भूरी आंखें, पिचके गाल
उलझे उलझे बेतरतीब बाल ।
वह छोटा सा लड़का,
मेरे पास आकर
रोज़ दार्शनिक अंदाज़ में कहता
लो आंटी जी
बूढ़ी माई के लाल बाल
कल हरे, आज नए कमाल ।
मैं दस रुपये उसके हाथ में थमा देती ।
वो बोहनी के रुपये माथे से लगा लेता
किसी बुजुर्ग की तरह ।
और 'थैंक यू 'मेरी तरफ बढ़ाता
चल देता चिल्लाता----
बूढ़ी माई के बाल
कल हरे, आज नए कमाल ।
टेस्टी टेस्टी शुगर बाल
आओ ,खाओ ,करो धमाल ।
और मैं हर रोज़ की तरह
ठिठकी सोचती रहती
'कि क्या बेचता है ये बच्चा' ?
बूढ़ी माई के बाल ??
हसरतें ??
या अपना बचपन ??

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

अदरक वाली चाय

अलका कांसरा

चण्डीगढ़, भारत

जब भी पुराना साथी
आता है
पुराने साथियों के बीच
रिटायर हो कर
बिलकुल वैसे ही
जैसे होती है घर वापसी

उम्र के इस पड़ाव पर
बहुत दूर लगते हैं पुराने दिन
न जाने कहाँ गुम हो जाता है
वह बेफ़िक्रापन
वह मासूमियत
बात बात पर हँसना और हँसाना
वह समोसे और पकौड़े खाना
वह नई साड़ी पहन इतराना

जिस दिन मिल बैठता
अपना यह दोस्तों का टोला
लौट आता
वही बचपन
वही बेफ़िक्रापन
फ़ोटो खींचना और खिंचवाना
नई साड़ी पहन इतराना
अदरक वाली चाय पीना पिलाना
समोसे और पकौड़े खाना
वही बात बात पर हँसना और हँसाना
बैठे बैठे खेलते जाना
कच्चा पक्का, पक्का कच्चा
दिल तो है जी अभी बच्चा।

प्याला चाय का

चाय का प्याला
या फिर कोई बहाना
बात आगे बढ़ाने का
एक चाय का प्याला
गपशप और चुटकुलों का रेला
दोस्तों का मेला

रेल का सफ़र हो
या हवाई जहाज़ का
कालेज की कैंटीन हो
या दफ़्तर का कैफ़ेटेरिया
जुड़ जाता
अजनबीयों के बीच भी
जान पहचान का तागा
जब हाथ में हो
चाय का प्याला

मूसलाधार बारिश हो
और सड़क पर
छोटी सी
चाय की दुकान
ठण्डे हाथों में
गर्म चाय का प्याला
कनखीयों से देखना
और शुरू
प्यार का सिलसिला
बात फ़िल्मी ही सही
पर ग़लत नहीं

सुस्ताई सी
अलसाई सी सुबह
गुलाबी सा मौसम
हाथ में जादुई प्याला
हमसफ़र का साथ
निकलती गई
बात में से बात
चाय समाप्त
पर बात तो अभी बाक़ी है
एक प्याला और सही

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

ग़ज़लें-सूफ़ी

सुदेश मोदगिल नूर

पंचकूला, भारत

दिल के पहलु में जब मैंने देखा तुम्हें,
मेरे बेचैन दिल को क़रार आ गया
मैं ग़ज़लों में तुमको पिरोने लगी
दिल में चलके जो तू एक बार आ गया

है अजब बेखुदी जाके किससे कहूँ
धड़कनों में यह कैसी रवानी हुई
कैसा जादू हुआ मुझ पे या रब तेरा
ऐसा लगता है जैसे खुमार आ गया

मुझे ख्वाबों में मिलना आकर कभी
हालेदिल अपना तुमको सुनाऊँगी मैं
जहे क़िस्मत तेरी मेहरबानी हुई
जबसे तेरा पैग़ाम-ए-दीदार आ गया

तुमने अपना बनाया है जबसे मुझे
ऐसा लगता है जन्नत मुझे मिल गई
दिल ने सजदा हर लम्हा तुमको किया
ज़िंदगी में अजब सा निखार आ गया

कभी दिन के उजाले में मिलना मुझे
आरज़ू है तुझे देखूँ मैं रुबरू
सारी दुनिया से कह दूँगी मैं राजे-दिल
नूर" मिलने मुझे मेरा यार आ गया

दिल से हरेक खौफ़ भगाने की बात कर
जब तक है जान हसने हसाने की बात कर

बेवजह दिल पे डर का कोई बोझ क्यों रहे
इस दिल में अब खुदा को बसाने की बात कर

कोई भी लफ्ज़ खार सा मत ला जुबान पर
हरगिज़ न दिल किसी का दुखाने की बात कर

कुछ रोज़ ज़िंदगी है , इसे प्यार से गुज़ार
रूठे अगर कोई तो मनाने की बात कर

अदना सी ग़लतियों पे खफ़ा हो रहा है क्यों
रिश्ते अज़ीज़ हैं तो निभाने की बात कर

साथी है नासमझ तो दिखा अपनी अक्ल तू
ममता से "नूर" उसको सिखाने की बात कर

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

हरियाला पर्व

किरण गर्ग मुग्ध

पटियाला, भारत

रंग बिरंगे लाल हरे पीले नीले सफेद
फूलों की क्यारियां
उड़ती हवाओं में खिलती
कलियां और उनकी
इंद्र की अप्सरा सी
नृत्य करती भाव भंगिमाएं ।
जलपरी सी
मचलती
कर रही अठखेलियां
स्पंदन करती लहरों पर ।
गूंज रही
स्वर लहरियां
झूमते पेड़
चूमते ललाट गगन का ।
उड़ उड़ हवाएं
साज बजाती
„लहरों पर तैरती
मुर्गाबियों की शोख
चंचल
मदमस्त अदाएं
मानो
करती हों स्वागत
बसंत राज का„
ज्यों मनाती हों पर्व
प्रेम और अनुराग का,
हां
प्रेम भी तो उत्सव ही है
मनो के आलिंगन का
आत्म से आत्मा के
चुम्बन का।
प्रेम
निरंतर
शाश्वत

बहता झरना सा
मरू में जैसे
ठंडा
शीतल
नीर ।
आओ मनाएं
उत्सव
ऋतुराज
बसंत के आगमन का
दुष्यंत शकुंतला के
प्रणय मिलन का..
करें पूजन
मां सरस्वती का
मांगें वर
विद्या, सुर,संगीत
और वाणी में माधुर्य का..
करें गान
परस्पर मिल कर
ईश.प्रणय.ऋतु का
फैले चहुं ओर
मधुमास
शांति भाईचारे का..
मिटे क्लेश,नफरत
फैले शांति का संदेश
चारों दिशाओं में
हवा की ओट लेकर
मंद समीर सा ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

फैसला

डॉ० उषा लाल

कुरुक्षेत्र, भारत

मुझे मेरा निर्णय लेने दो
ठीक है
पति हो
मां बनने का सौभाग्य
तुम्हीं से मिला
लेकिन
चाहती हूं
इस निर्णय में
तुम मेरा साथ दो
किसी-और की परवाह नहीं
केवल
तुम्हारी सहमति चाहिए।
ठीक है
कदम से कदम मिलाकर
खाई थीं कसमें (फेरे लेते वक्त)
लेकिन भावनाओं के दस्तावेज पर
नहीं किए थे हस्ताक्षर,
उन्हें आहत करने का
नहीं दिया था अधिकार
तुम्हें भी।
वरना
निर्णय ले चुकी हूं मैं
बेटी की मां बनने का
जो संस्कारित करेगी
घर को
परिवार को
समाज को।
कहां लिखा है
यह सौभाग्य
प्राप्त होगा दोबारा ?
मैं बांझ नहीं
कहलाना चाहती हूं।
हैं !
क्या कहा ?
तुम मेरे साथ हो।
हां,
यह निर्णय केवल
तुम्हारा नहीं
हमारा है
खोला दिल का बंद दरवाजा
ईश-सौगात अपनाऊं।
लड़का हो या लड़की
मिल-जुल कर खुशी मनाऊं

मोह-धागे

उदास मत हो मित्र
चेत जाओ, समय है
मोह-धागे
मत बनाओ ऐसे
जैसे होती
पतंग की डोर
जो खींचनी पड़े
तो पड़ जाएं छाले
तुम्हारा चहुं ओर।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

उपहार

संतोष गर्ग "तोष"

पंचकूला, भारत

छोटे-छोटे उपहार याद दिलाते हैं हमें बीते दिनों की। उन्हीं से प्रेरणा मिलती है कि हम भी आने वाली पीढ़ी को कुछ देकर जाएं। कोई ऐसी वस्तु जिसे वह सहेज कर रख सकें। भले ही वह भाव हों, विचार हों, शब्द हों अथवा ज्ञान हो।

सीता भी शादी के कुछ दिन पश्चात जब मां के घर गई तो उसकी दादी ने उसे अपने संदूक से निकाल कर दादा जी की पुरानी चांदी की गोल-गोल अनमोल घड़ी दी, जिसे वह अपने गले में डाल कर रखा करते।

यूँ तो कहने मात्र को वह छोटी सी वस्तु थी परंतु अब वह जब भी कभी अपनी अलमारी में रखी उस घड़ी को देखती है तो दादा जी का चेहरा आंखों के सामने आ जाता है।

सोच रही थी.. दादी का दिया हुआ यह छोटा सा उपहार कितना आनंद देता है। दरअसल देने की परंपरा हमें जोड़ कर रखती है।

यही सोच कर सीता ने भी अपनी आठ महीने की नन्ही सी पोती पवित्रा के लिए, हाथ के सूई धागे से सिलाई कर के नाईट सूट पहनाया।

छोटी सी बात

जैसे ही सुमन समाचार पत्र पढ़ने बैठी तो नजर एक विज्ञापन पर जा अटकी।

उस विज्ञापन में एक छोटी बच्ची अपने दादा की उंगली पकड़े हुए चल रही थी। सुमन ने कैंची उठाई और तुरंत उस चित्र को समाचार पत्र में से निकाल लिया।

पतिदेव ने देखा तो पूछा, 'यह तो विज्ञापन है इसका क्या करोगी ?' 'करना क्या है.. सीढी की दीवार पर लगाऊंगी। इस बिल्डिंग में हम 15 परिवार रह रहे हैं। लोग देखेंगे और पढ़ेंगे..।'

'..तो उससे क्या होगा ?'

'होना क्या है...सुनो ! यदि इसे देखकर किसी एक व्यक्ति को अपने पिता की याद आ गई और उन्हें फोन कर लिया तो मेरा चित्र लगाना सफल हो जाएगा या फिर किसी को अपनी बुड्ढी मां याद आ गई, उससे मिलने चले गए अथवा 4 दिन रहने के लिए अपने पास बुला लिया... बस... मेरा चित्र लगाना सफल हो जाएगा...।'

जीवन

पालम सैनी

ग़ाज़ियाबाद, भारत

अनसुनी प्रार्थना जीवन
अनकही कामना जीवन
हककद्दय को थामना जीवन
समय से सामना जीवन

श्वसन सन्यन्त्र सा जीवन
अविदित मन्त्र सा जीवन
रहस्यमय तंत्र सा जीवन
स्वचालित यंत्र सा जीवन

सरिता धार सा जीवन
नाव पतवार सा जीवन
सतत लाचार सा जीवन
कठिन व्यापार सा जीवन

मरूस्थल रेत सा जीवन
धवल व श्वेत सा जीवन
सूखता खेत सा जीवन
मृत्यु संकेत सा जीवन

कहीं मधुमास सा जीवन
कहीं उपवास सा जीवन
महल आवास सा जीवन
कहीं वनवास सा जीवन

कभी संगीत सा जीवन
कभी मनमीत सा जीवन
कभी विपरीत सा जीवन
कभी भयभीत सा जीवन

क्षीण निर्माण सा जीवन
असत्य प्रमाण सा जीवन
अचल पाषाण सा जीवन
वेद महापुराण सा जीवन

एक आलोक सा जीवन
गीता श्लोक सा जीवन
प्रकाश स्रोत सा जीवन
दीप्त ब्रह्मजोत सा जीवन

यही कुछ सर्वथा जीवन
नहीं कुछ अन्यथा जीवन
यथा सम्भव तथा जीवन
कर्मफल की प्रथा जीवन...

सांप और सपेरे

बाल कृष्ण गुप्ता 'सागर'

पंचकूला, भारत

आपको अपना बचपन तो याद ही होगा
कितना अच्छा लगता था तब जब
गली में सपेरे बीन बजाते आते थे
उनकी बीध की धुन सुनकर हम सब
गली में सांप का खेल देखने भागते थे
क्या दिन थे वे, कितने खुश होते थे
सांप नेवले की लड़ाई भी देखकर
सांप का फन उठाकर धुन पर नाचना
कितना अच्छा लगता था

शहर के बाहर बस्ती में झोपड़िया में
सपेरे रहते थे जो दिन निकलते ही
रोजी रोटी की तलाश में पिटारा उठाकर
शहर की गलियों में बीन बजा बजाकर
आप हम सबको तालियां बजाने पर
खिल खिलाकर हंसने, पर मजबूर करते थे
क्या सुखद दिन थे वे

जब कभी किसी के घर में सांप निकलता
लोग सपेरे के पास जाकर उसे बताते
वह खुशी से बीन बजा कर सांप को बुलाता
सांप पकड़ ले जाता, इनाम पकड़ दुवाएं देता

अब तो हम सब की बचपन की खुशियां छीन गई
अगर किसी को कभी सांप काट जाता
यही सपेरे आकर कुछ मंत्र पढ़ कर
झाड़ फूंक कर सांप का विष उतार देते
विज्ञान के युग में कितना अद्भुत लगता था
सपेरों के रहते, सांप के काटने पर भी
कभी कोई मरता ही नहीं था
अब तो सपेरों की रोजी-रोटी छिन गई है
इस सब पर कई प्रश्न चिन्ह लग गए हैं

सांप कहां चले गए दिखाई नहीं देते
बेचारे सपेरे कहां चले गए
सांपों को पकड़ वश में करने की कला
न जाने कहां गायब हो गई

अचानक याद आ ही गया
सांप आज बहुत शक्तिशाली हो चुके हैं
सांपों को तो राजनीतिक संरक्षण मिल चुका है
पहले तो वह जीवधारियों को ही काटते थे
अब अपने देश को ही डंक मारने में लगे हुए हैं
देश की राजधानी हो या कोई प्रदेश
सभी सांप गुट बनाकर अर्थव्यवस्था पर भी
कुंडली मार बैठ ही गए हैं
उनको पकड़ने या मारने पर पाबंदी है
सपेरे अब कहीं भी नहीं रह गए हैं
जो इन सांपों को पकड़ कर
अपने पिटारों में बंद कर
बीन बजा कर बच्चों का मनोरंजन करें
सपेरे अब वैसे ही लुप्त हो चुके हैं
जैसे हम सब बच्चों के चेहरों से
बचपन की मुस्कुराहट

सतवंत कौर गोगी गिल

चण्डीगढ़, भारत

अश्क़

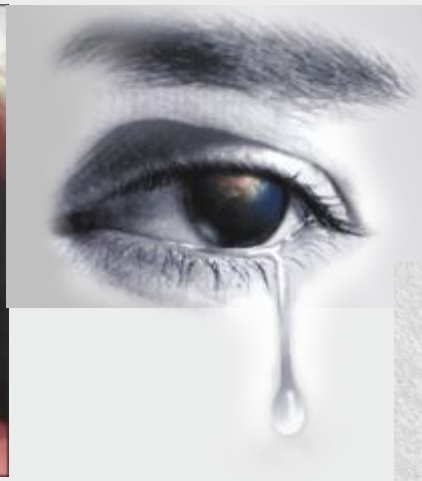

कई बार पलकों ने अश्क़
यूं छिपा लिए
दुनियाँ की नज़रों से
कैसे बचा लिए
अन्दर ही घुट घुट के
अश्क़ के घूंट पी लिए
जाने कैसे ज़ख्म थे जो
अशको ने जी लिए।

कई बार तो बिन बादल की
बरसात से बरस गये
कोई बस न चला इन पर
आँखों से फिसल गये
पता नहीं बेबात ही क्यों
कब छलक गये
कभी किसी की याद में
अश्रु धारा से निकल गये।

अजीब सी बात है इन अश्क़ो की
गम में रूकते नहीं बहते हैं
और खुशी में भी आँखों से
छलकते रहते हैं
कभी ख□ी मीठी यादों के साथ
अश्क़ कहानी कहते हैं
कभी इन्तज़ार में होके बेक़रार
पलकों से ढलते रहते हैं।

कभी किसी गली से गुजरते हुए
गीली आँखों को धुँधलाते हैं
शहर या गाव में खो गया
बचपन
ढूँढते ही आँख में भर आते हैं
घर को छोड़ गए अपनों के
वियोग में
अश्क़ सैलाब बन जाते हैं
किसी दुखी को देख बहते हैं जो
अश्क़
ये तुझको इन्सान बनाते हैं।

ख़्वाब

मेरे कुछ ख़्वाब
झील के पानी से गये ठहर,
जैसे मील का पत्थर
गया ना कभी सफ़र।

ख़्वाबों की हुई ना
किसी को कोई भी ख़बर,
बीती एक पूरी सदी
बीते कितने पहर।

ऐसे थे कुछ ख़्वाब
गये बस आँखों में ठहर,
मुझे लगे कभी-कभी
जैसे-ख़्वाब गये हैं मर।

पर नहीं उठते हैं
अंदर करते हैं वो क़हर,
क्या ये तड़फड़ायेंगे यूँ ही
मुझको ता-उम्र भर।

ख़्वाब थे बहुत ही मीठे से
पर अब लगें वो ज़हर,
अधूरे खिले फूलों से ख़्वाब
खिले ना किसी पहर।

कीटों-सी तीखी चुभन
छलनी करते दिल को कहीं भीतर,
बूँद बनके छलके पलकों पर
सूख कर गये ठहर।

घर में उम्र क़ैद हो गये
खुले हैं दर फिर भी बंद अंदर,
कोई क्या समझेगा इसे
जो चला न इस डगर।

प्यारे से थे कुछ ख़ास-से
ख़्वाब थे बहुत सुंदर,
क्या हुई ख़ता नहीं लगा पता
कब कैसे ख़्वाब गये मर।

बस जी रहे हैं अब तो
यूँ ही याद करके घुट-घुट कर,
कोई कर देना दुआ
बस सह लूँ टीस,करूँ सबर।

कुछ यूँ ही कट गया ज़िन्दगी का
ये मेरा सफ़र।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

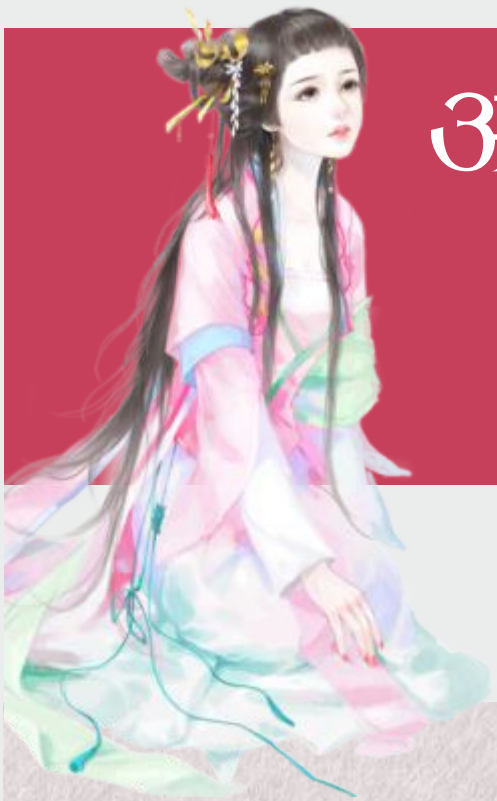

अधूरी-सी मैं

रेखा मित्तल

चण्डीगढ़, भारत

जब भी मुलाकात होती है तुमसे
थोड़ी-बहुत वहीं छूट जाती हूँ मैं
मिलती हूँ जब भी तुमसे
हर बार अधूरी-सी लौट आती हूँ मैं

बहुत से शिकवे हैं तुमसे
बहुत सी शिकायतें हैं जमाने से
तुम्हारा मन की बातें करते करते
अपना कुछ न कुछ छोड़ आती हूँ मैं

तुम भी तो बदल से गए हो
कभी पूछते ही नहीं मेरे बारे में
दुनिया भर की बातें करते-करते
अपनी रूह ही वहाँ छोड़ आती हूँ मैं

सोचती हूँ जब तुमसे मिलूँगी
तुम संग मन की तहें खोल दूँगी
पर देख तुम्हें कुछ भी याद नहीं रहता
हर बार अधूरी-सी लौट आती हूँ मैं

अबकी बार जब मैं तुमसे मिलूँगी
मैं ही कहूँगी तुम बस सुनोगे
लौटा देना मुझे मेरा वह सब कुछ
जो हर बार तुम्हारे पास छोड़ आती हूँ।

गुलमोहर आवाज़ दे रहा है

बड़ी शिद्दत से सहेज कर समेट कर
रखी है मैंनें हमारी कुछ हसीं शामें
अपने ख्वाबों की अलमारी में
बहुत करीने से सँभाल कर
जब कभी याद आती है तुम्हारी
तो चली जाती हूँ उस अलमारी में
ओढ़ लेती हूँ तुम्हारे साथ बिताए पल को
और कुछ ही क्षणों मे जी लेती हूँ ज़िंदगी

मुश्किल बहुत था इन यादों को भूलना
परंतु मैंनें तो इनके साथ जीना सीख लिया
वह अधूरा प्रेम था या कुछ और
जो अकुंरित हुआ उस गुलमोहर के नीचे
आज भी निकलती हूँ वहाँ से कभी
तो लगता है गुलमोहर आवाज़ दे रहा है
यह आवाज़ तुम्हारी है या उस गुलमोहर की
समझ नहीं पाती हूँ !!

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

ग़ज़लें

'सागर' सूद संजय

पटियाला, भारत

लफ़्ज़ों को सजाने की अदा सीख रहा हूँ
रूठों को मनाने की अदा सीख रहा हूँ

दिल खोल दिखाने का हुनर सबको पता है
ज़ख्मों को छुपाने की अदा सीख रहा हूँ

खुशियों को भी अपना के यहाँ देख लिया है
अब ग़म को हँसाने की अदा सीख रहा हूँ

लोगों के दिलों में है जो मज़हब ने लगाई
वो आग बुझाने की अदा सीख रहा हूँ

रौशन मैं करूँ राह सदा अपने सनम की
इस दिल को जलाने की अदा सीख रहा हूँ

जो राजगुरु, भगत व सुखदेव में देखा
वो जोश जगाने की अदा सीख रहा हूँ

किस्मत में नहीं फूल तभी घर को मैं अपने
खारों से सजाने की अदा सीख रहा हूँ

फ़ैशन का ले के नाम जो खुद हमने गवाई
वो लाज बचाने की अदा सीख रहा हूँ

खो जाएं न हम देख कहीं भीड़ में 'सागर'
खुद राह बनाने की अदा सीख रहा हूँ

ख़त्म ये सिलसिला नहीं होता
दर्द मुझसे जुदा नहीं होता

लाख कहता हूँ मैं बुरा उसको
फिर भी मुझसे ख़फ़ा नहीं होता

बन न पाता कभी भी मैं शायर
उस से गर फासला नहीं होता

जान पाता न ज़िन्दगी तुझको
ग़म से गर सामना नहीं होता

एक शिकवा यही है बस तुझसे
काश ! तू बेवफ़ा नहीं होता

मर ही जाता कभी का ये 'सागर'
ग़म का जो आसरा नहीं होता

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

मेरा भारत

कृष्णा गोयल

पंचकूला, भारत

मेरा भारत देश है निराला ।
सागर पखारे चरण इसके
सिर पर सोहे मुकुट हिमाला ।
मेरा भारत देश है निराला ।

रंग बिरंगी भाषाएं इसकी
वैज्ञानिक है प्रथाएं इसकी
खूब तारीफ बताएं इसकी
वेद पुराण कथाएं इसकी ।
ये योग ऋषि मुनियों वाला
मेरा भारत देश है निराला ।

त्योहार आसमानी घटनाएं है
ब्रह्मांड के सब भेद सुनाएं हैं
नेगेटिव एनर्जी होती दूर,
जब लोहड़ी होली मनाएं हैं ॥
यह दुर्गा पूजा वाला ।
मेरा भारत देश निराला ।

यहां दूध चढ़े पार्थ शिवलिंग पर
रेडिएशन का कम हो जाए स्तर
सिर तोड़ मेहनत करते देशवासी
हो जाएं पसीने से तरबतर ॥
हर देशवासी कर्मो वाला ।
मेरा भारत देश निराला ।

ब्रह्मांड से एनर्जी पॉजिटिव आए
तो भारत में हम नवरात्रि मनाएं
व्रत से सुधारें अपने तन को
मंत्र से मन सशक्त बनाए ।
यहां नवरात्रि का उजाला ।
मेरा भारत देश निराला ।

यहां संत महात्मा मैदान में आएं
जैनी साध्वियां लाठी चलाएं
रक्षा खातिर एकजुट हो जाएं
मन में देश भक्ति की ज्वाला
यह मेरा भारत देश निराला ।

हमारे वीर जवान मतवाले हैं
लौह शरीर चौड़ी छाती वाले हैं
सिरों पर टैंकों को उठा लेते
हमारे फौजी हिम्मत वाले हैं ।
हर वक्त खुशियों का उजाला ।
मेरा भारत देश निराला ॥

सिर धड़ की बाजी लगाते हैं ।
जलती टांगो से टैंक चलाते हैं
खाकर गोली सीने पर
दुश्मन के टैंक उड़ाते हैं ।
दुश्मन के छक्के छुड़ाने वाला ।
मेरा भारत देश निराला ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

मां

डॉ0 जवाहर धीर

फगवाड़ा, भारत

लघु कथा

नवीन की मां का चेहरा उसकी एक आंख के न होने के कारण बदसूरत दिखाई देता था, जिसके कारण नवीन मां से नफरत करने लगा। उसने कभी भी मां को मां की दृष्टि से नहीं देखा। बचपन से ही वह मां को देखता तो पता नहीं क्यों असहज हो जाता। समय बीतता गया और स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद वह शहर में पढ़ने के लिए चला गया और बाद में फिर कभी मां को मिलने नहीं आया।

घर पर मां अकेली रहती और दिन रात बेटे और पति को याद करती रहती। पिता तो एक दिन नवीन के बचपन के दिनों में ही ऐसे विदेश गए कि फिर लौट कर नहीं आए। शुरू-शुरू में नवीन की पढ़ाई के नाम पर पैसे भेजते रहे, फिर धीरे-धीरे वो भी बंद कर दिए।

बढ़ती उम्र के इस पड़ाव में मां के लिए अकेले समय काटना भी मुश्किल होने लगा। उसने एक दिन पड़ोस में रहने वाली मास्टरनी को घर बुलाकर कहा कि जब वो मरे तो अगर मेरा बेटा आ जाए तो उसे बतला देना कि उसने अपनी आंख उसे बचपन में उसके साथ हुई दुर्घटना में उसकी आंख चले जाने के कारण आप्रेशन करवा कर उसे लगवा दी थी, ताकि कोई उसे कोई उसे काना न कहे। एक दिन जब मां का देहांत हो गया तो शहर में किसी ने बेटे को बता दिया और अंतिम संस्कार में जाने को कहा। नवीन ने आकर सारी रस्में पूरी कीं।

अंतिम संस्कार के बाद जब वह घर आया तो मोहल्ले के लोग भी अफसोस करने के लिए जुटने लगे पड़ोस वाली मास्टरनी भी आ गई और वह नवीन के पास ही बैठ गई। उसने सबके बीच मां की अपने बेटे के लिए की कुर्बानी की बात कही तो नवीन के कान खड़े हो गए और उसने मास्टरनी से पूछा - यह क्या कह रही हैं आप ? मां ने अपनी आंख मुझे लगवा दी थी, और वह रोने लगा। रोते-रोते अपनी सुध-बुध खो बैठा और उसके मुंह से सिर्फ़ इतना ही निकला-मां मुझे माफ़ कर दो। मैं सारी ज़िंदगी यह जान ही नहीं पाया।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

सांत्वना

लघु कथा

डॉ० प्रज्ञा शारदा

चण्डीगढ़, भारत

जिंदगी के कुछ पहलुओं को यदि हम अपने जीवन से निकाल दें तो बहुत सी खुशियाँ और संतोष हासिल होता है । कभी-कभी छोटी-छोटी काट-छांट भी अच्छे परिणाम दे जाती है ।

कभी-कभी सोचती हूँ कि एक औरत की जिंदगी और रसोई को साथ रख कर देखो तो बहुत सी समानताएँ नजर आती हैं। काम करते करते अचानक किसी सुबह कुछ जल जाता है जैसे हमारे जीवन में अचानक कोई परेशानी आ धमकती है बिना इजाजत के, बिना बताए । कभी-कभी जायका दोगुना भी हो जाता है जैसे जीवन में अचानक कोई खुशी हमें मिलती है । जल जाने पर हम उसे ठीक करने की कोशिश में जुट जाते हैं, जिस प्रकार अपमान की तेज आँच के पश्चात फिर से सम्बन्ध सुधारने की जद्दोजहद शुरू हो जाती है । लोगों को लगता है कि दौलत शौहरत पाकर हम सुखी हो जाएँगे पर ऐसा है नहीं, कई लोग ये सब होते हुए भी अप्रसन्न हैं और बहुत से इनके बगैर भी सुखी हैं । जो लोग नकारात्मक सोच लिए रहते हैं वे सबसे ज्यादा परेशान रहते हैं ।

एक रात सुबह के तीन बजे पूनम ने अपना पति खो दिया । रात सोते समय तक भी आभास नहीं था कि कल की सुबह उसके जीवन में गहरा अंधकार भर देगी । वो अमावस्या की काली रात थी । स्याह काली रात जिसका सवेरा उसके जीवन को स्याह कर गया ।

एक गहरा आघात था उसके जीवन में । अफसोस के लिए जो भी आता एक उम्मीद की किरण देकर जाता । वो चार महीने की गर्भवती थी । सभी ढ़ाढ़स बंधाते, "बस जी अब रोओ मत, रोने से क्या होगा ? आगे की सोचो । बहु का ख्याल रखो । उसे अधिक रोने मत दो । बच्चे पर असर पड़ता है । "वगैरा-वगैरा । " हर इंसान सकारात्मक सोच लिए हुए था । ठीक भी है । जो हो गया उस पर तो हमारा जोर नहीं पर आने वाले हालात सुधारने की कोशिश हमारे हाथ में है । कुछ आते और कहते. " कोई गल नहीं जी, वेखना, "वड्डे पैरीं गिया है ते छोटे पैरीं वापस वी आएगा" हौसला रखो । ठीक भी था, बाकि के पाँच महीने इसी उम्मीद में बीत गए कि, "ओह छोटे पैरीं आएगा" । हालांकि उसकी सास ने उसे ढाढ़स बंधाते हुए कहा था, मैंने बत्तीस साल पाल कर बेटा एक पल में खो दिया, तू बेटे की उम्मीद मत रख । जो भी होगा मेरे बेटे की निशानी होगा । 'इतना बड़ा दिल भला किस औरत का होगा । हम सब सुनकर हैरान थे ।

तरुणा पुंडीर 'तरुनिल'

दिल्ली, भारत

ग़ज़ल

नज़र में है फकत जलवा हमारा
किसी को क्या पता क़िस्सा हमारा

चुनावी शोर है हर ओर लेकिन
अभी सोया है मतदाता हमारा

कमाने के लिए दिन रात जागे
तमाशा बन गया अच्छा हमारा

छुआ जो जुल्फ को उसने हमारी
हुआ ये दिल भी दीवाना हमारा

नज़र भर देख कर हंस जो दिए हम
कि सब कुछ कह गया हंसना हमारा

सारा स्कूली तंत्र हिला,
फेक मेल की पाय ।

खुराफ़ाती दिमाग का,
खेल देख घबराय ।

खेल देख घबराय,
भ्रमित फिर हुआ प्रशासन ।

पुलिस साथ सरकार,
हिल गए सबके आसन ।

राजनीति प्रतिद्वंद्व,
मति विवेक सभी हारा ।

पंगा भारत से लिया,
हिला कर शासन सारा ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

अलग हमारी हिन्दी

हरेन्द्र सिन्हा

चण्डीगढ़, भारत

जय हिन्द हमारी मान है,
हमारी जान है हिन्दी,
भारतीय सभ्यता की,
आन बान, शान है हिन्दी ।

सबके मन को भाती है हिन्दी,
सबके दिल को छू जाती है हिन्दी ।

हमारी पहचान है हिन्दी,
बहुत धनवान है हिन्दी,
सूर, कबीर, तुलसी औ,
मीरा की जुबान है हिन्दी ।

महादेवी, प्रेमचंद, हजारी,
दिनकर की बयान है हिन्दी
साहित्य, संस्कृति, मानवता,
की पहचान है हिन्दी ।

अपने घर, परिवार, समाज,
औ देश को सजायें हिन्दी से,
बच्चे, बच्चियों, महिलाओं को,
खिलखिलायें हिन्दी से ।
हमारी हिन्दी, अब देश में
ही नहीं, विदेशों में
भी फैल गई है,
हर वर्ग के लोगों के दिल की,
अब खिलता हुआ
जुबान बन गई है ।

जय मां गंगे

मां गंगा के पावन जल से मन को रोज ही धोना है,
जीवन में गंगाजल को बस दिल में अपने संजोना है ।
मेरे देश की मां है गंगा, सबका ये कल्यान करें,
हम सब मिलकर इसकी पवित्रता का,
दिल से सब सम्मान करें ।
प्रभु राम के चरणों से मां गंगा का अवतार हुआ,
भोले बाबा के जटा में बंधकर मां गंगा का मान बढ़ा ।
केवट ने गंगाजल से, प्रभु राम के पैर को धोया था,
तब जाके श्रीराम को अपने नाव पे उन्हें संजोया था ।
रग रग में गंगा मैया के जल का हम छिड़काव करें,
मां गंगा को पवित्र रखेंगें, मन में सबके भाव भरें ।

जय हो गंगा मैया की ।

NEWS GLOBAL समाचार वार्ता

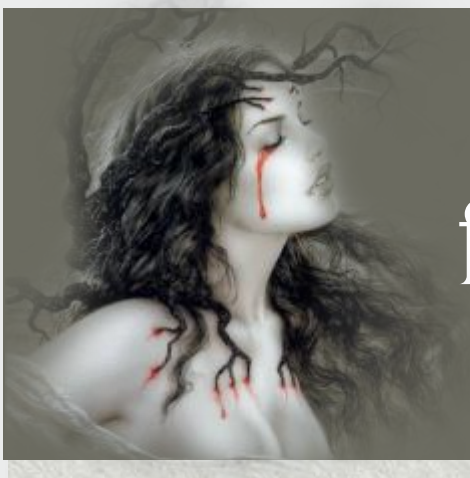

तेरी रिक्तता का तिमिर

शैली विज

चण्डीगढ़, भारत

जिस एकादशी को मैंने
कंठ में रख
भीगने से परहेज़ किया
वह उतर आई आँखों में
तेरी रिक्तता का तिमिर
मेरे दिन को अमावस कर गया ।
अघाई नहीं जा रही भीड़
घुल रहा है कानों में
संगीत का सीसा
किसी तानपुरे की ढीली तार सा
बेसुरापन ।
आने वाले कल की दीवार के पार
देखने की उचक में
मुझे दिखाई नहीं देती
अपने पाँव तले
हांफने की काई ।
संभावनाओं को नाप कर
दुख ढूँढते हैं बहाने
बसेरों का
परिपक्व होकर
हठ के इतने पत्थर चिनवा देते हैं
कि मीनारें तन जाती हैं
बिना खिड़की के
जिसके भीतर श्वास
उसे नम नहीं कर पाता ।
लाओ कोई कुदाल
बनाओ कोई औज़ार
सेंध दो मीनारें
वध करो वैराग्य का
चीर डालो भीड़ को
छूने दो मुझे हृदय की स्निग्धता
मेरी कविता काशी काबा
करने दो दुख का निपटान ।

काफ़िर इश्क़

गीली ज़मीन तस्दीक थी घायल आसमां की
वक्त की आँख में तिनका कोई गिरा होगा

बौराया सा फिरता था रात से टूटा टुकड़ा
काजल नहीं कोई ख़्वाब ही जला होगा

बांध दो मुझे बारिशों का पनीला ताबीज़
नज़र उतारने का भ्रम कोई बचा होगा

मखमली कोहरे में नाव कोई समेटे हुए
हद से अनहद का सफ़र यूँ कटा होगा

जमा है इंतज़ार शाम की आस्तीन पर
इश्क़ से मुलाकात का वादा किया होगा

कहानी के भीतर कहानी एक चलती है
रूह की सिहरन में कुछ सुलगता रहा होगा ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

बेटी

इंद्र वर्षा

पंचकूला, भारत

बाप की पगड़ी है बेटी
भाई की रखड़ी भी है
मां को लगती प्यारी बेटी
पिता की दुलारी भी है
हाथ का कंगन है बेटी
माथे का चन्दन भी है
चूड़ियों की खनक बेटी
पायलों की छनक भी है
मायके की चहक बेटी
ससुराल की महक भी है
देश की कल्पना है बेटी
भारत की विलियम भी है
देश की ये आन बेटी
परिवार का ये मान भी है
माँग का सिंदूर बेटी
भारत का ये नूर भी है
फूल सी कोमल है बेटी
और तेज़ तलवार भी है
लाज और शर्म की मूरत
कुर्बानी की सूरत भी है
गीत भी संगीत भी
ढोलक की ये ताल भी है
है ये तन को भी लपेटे
मन को भी ये है समेटे
सांभ लो संभाल लो
ये बेटियां, ये बेटियां

नारी

जहां नारी की पूजा होती है
वहाँ देवताओं का वास होता है
नारी ! तुम अबला नहीं सबला हो
नारी ! तुम श्रद्धा हो, विश्वास हो

तुम प्रकृति की अनुपम सुकृति हो
सृष्टि की उज्जवल देन हो
कितने सुख देती हो, जग को
माँ, बेटी, बहन, पत्नी बन हो आई
जग की वृद्धि भी तुम से ही है
जग की प्रत्येक सिद्धि भी तुम से है

तुम हो तो ये अपार सृष्टि है
पौरुष बल के लिए दृष्टि, तुम हो
साक्षात् लक्ष्मी भी तुम ही हो
कुमार्ग के लिए सन्मार्ग भी तुम हो

शिशु की ऊँगली पकड़, राह दिखाती हो
सन्मार्ग की ओर भी तुम ही ले जाती हो
तुम वंदनीय हो, तुम जगजननी हो
दुर्गा भी हो, तुम माया भी हो

NEWS GLOBAL समाचार वार्ता

बिजेंद्र सिंह चौहान

मोहाली, भारत

तिरंगा

सारी दुनिया से न्यारा, है शान तिरंगा प्यारा
केसरिया रंग दिवाकर, है साहस हमें सिखाएं
ये श्वेत रंग मन भाएं, शांति का पाठ पढ़ाएं
ये रंग हरा हरियाली, मन में विश्वास बढ़ाएं
ये नीला चक्र निराला, जीवन का चक्र बताएं
चमके नभ में यूं तारा, है शान तिरंगा प्यारा ।

है शान हिन्द तुम से, तुम से ही गौरव अपना
हो नभ से ऊंचा झंडा, देखा है बस ये सपना
इक सांस बची जब तक, बस गीत वतन के गाऊं
अंतिम इच्छा ये मेरी, तुझ में लिपट मैं जाऊं
अर्पित जीवन ये सारा, है शान तिरंगा प्यारा ।

बलिहारी इस पर जाऊं, दिल में उमंग है छाएं
जन्मों-जन्मों तक यूं ही, ये लहर-लहर लहराएं
जीना बस इसकी खातिर, इस पर ही जान लुटाएं,
इस को ना झुकने दूंगा, बेशक गर्दन कट जाए,
ये जन गण मन का नारा, है शान तिरंगा प्यारा ।

जय हिन्द - वन्दे मातरम

जन गण मन की जय जय गाएं

लाखों कुर्बानी से पाया आज़ादी के ताज को
फ़र्ज़ हमारा रखें सलामत भारत मां की लाज को
हंसते-हंसते वीरों ने फांसी का फंदा चूमा था
वन्देमातरम की धुन पर हर एक सिपाही झूमा था
कितनों का बलिदान हुआ हुई मांग सुहागिन की सूनी
आज़ादी के सब मतवाले खेले होली थे खूनी
चौबीस घंटे बर्फ गिरे पर सैनिक सीमा पर जाएं
बलिदानों को याद करें हम जन गण मन मिलकर गाएं ।

सोलह-सोलह बार मार गौरी को धूल चटाई थी
एक समय ऐसा राणा ने घास की रोटी खाई थी
वीर शिवा ने भी मुगलों की ईंट से ईंट बजाई थी
घुटने ना टेके थे जिसने वो रानी लक्ष्मीबाई थी
असफाकउल्लाह बिस्मिल ने दुश्मन को धूल चटाई थी
मंगल पांडे जैसे वीरों से सत्ता घबराई थी
बेटे अर्पित किए देश पर धन्य सभी वो है माएं
बलिदानों को याद करें हम जन गण मन मिलकर गाएं ।

कितनों ने चूमा था फंदा हंसते-हंसते झूले थे
राजगुरु सुखदेव भगत भी दे कुर्बानी फूले थे
अंग्रेजों को खुदीराम ने बचपन में ललकारा था
ऊधम सिंह ने पापी डायर लंदन जाकर मारा था
आज़ादी के असली हीरो नाम मिला जिनको आज़ाद
खून मुझे दो लो आज़ादी नेता जी को कर लो याद
इन वीरों को पूजें पहले फिर भोजन का कण खाएं
बलिदानों को याद करें हम जन गण मन मिलकर गाएं ।

जय हिन्द - वन्दे मातरम

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

सबा के पन्नों से

ग़ज़लें

लिली स्वर्ण

चण्डीगढ़, भारत

ज़ीस्त की ना-मुराद चालों में
हम तो उलझे रहे सवालों में

चाँद तारे तवाफ़ करते हैं
तेरे रुख़ के हसीं उजालों में

एक उम्मीद पर तेरी जानम
क्या क्या गुज़रा है गुज़रे सालों में

तौबा हमने हज़ार की लेकिन
जाम आते रहे ख़यालों में

जब भी जलवों की बात होती है
ज़िक्र मेरा हुआ निरालों में

छुपते फिरते हैं आज नासेह जी
दीन-ओ-ईमान जैसी ढालों में

आओ तुमको छुपाएं सूरज से
अपनी काली घटा से बालों में

उनको शायद "सबा" नहीं मालूम
कैसे जीते हैं ऐसे हालों में

जान-ए-जाँ तेरे नाम लिखती हूँ
जो हवा में पयाम लिखती हूँ

मैं हिनाई हथेली पर अपने
मरमरीं सा कलाम लिखती हूँ

चाहतों की फ़िज़ाएं छाती हैं
जब पयाम-ओ-सलाम लिखती हूँ

रंजिशों को दबा के सीने में
ज़िक्र उसका तमाम लिखती हूँ

उसकी नज़रों की एक मस्ती पर
मय-परस्ती हराम लिखती हूँ

शाहज़ादे के बस तसव्वुर में
खुद को अक्सर गुलाम लिखती हूँ

हैं क़लम भी "सबा" का गर्दिश में
एक ख़त सुब्ह-ओ-शाम लिखती हूँ

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

लोकतंत्र

लघुकथा

रमेश कुमार संतोष

अमृतसर, भारत

"कहां रह गई इतने दिन"

"क्या बताऊं बीबी जी घरवाला (पति) गिर गया था"

"वह कैसे ...? ज्यादा तो नहीं लगी..."

"चोट तो बहुत लगी है ... सिर पर .. चार दिन अस्पताल में लगा कर आये है ..."

" यह कैसे हो गया.."

" बस डफ (पी) कर आ रहा था.... मुफ्त की थी ...बस...पी गया..."

"कोई पार्टी बगैरा थी.."

"वहीं इलैकशन वालों ने पिलाई थी । पर बाद में कौन आया... पता लेने .. कोई भी तो नहीं, सब मतलब के हैं "

"तुम भी तो भण्डा उठा कर जाती थी "

"बीबी जी आप से क्या छिपाना हम तो मेहनत करने वाले हैं कितने घरों का काम करती हूं... वह भी तो काम ही है..."

"कितनी दिहाड़ी मिलती है..."

"छोड़ो बीबी जी मुझे काम कर लेने दो... दूसरे घरों में भी जाना है..."

"वोट के कितने पैसे मिले थे..."

"मिले थे...सब ने लिए थे, पूरे मुहल्ले वालों ने..."

"पर कोई फायदा नहीं हुआ, सारा लग गया..."

"अब क्या हाल है..! ठीक है .?"

"काम पर जाने लगा है...।.... बीबी जी बातें छोड़ो ... मुझे चाय बना दो... थक गई हूं अभी चार घरों का काम बाकी है....।"

उस के हाथ तेजी से पोंछा लगाने लगे...।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

निर्मल सूद
चण्डीगढ़, भारत

रंग

रंग भी क्या खूब होते हैं
जो भी छूता है अपने ही
रंग में रंग देते हैं ।
मनोभावों के अनुकूल
रंग बदलते हैं,
पता नहीं कैसे अतरंगी
हो मुस्कुराते हैं,
कभी उदासी ओढ़ लेते है
कैसे मन को पढ़ पाते हैं
सच है सुरंग सभी को
सुहाते हैं ।
रंग तो कुदरती तिलिस्म है
जिधर देखो अनुपम नज़ारा
जिस रंग में मिल जाएं
उसी में रंग जाते हैं
विविध रंग भिन्न-भिन्न
भाव दर्शाते हैं
सुर्ख़ कुसुम्भी रंग
दिलों को प्यार से रंगते
हरा-हरा रंग पीड़ा हरता
मन को खुशियों से भरती
धवल रंग वीतराग शांति का
केसरिया मन को ओज से
भरता,
पीत वर्ण सखियों के संग-सा
गुलाबी रंग शिशु के कोमल
अंग सा
रंगों के भी कई रंग होते हैं
नव यौवना के दमकते मुखड़े
से चमकते,
कुछ वयोवृद्ध की धुंधली
दृष्टि-से फीके बदरंग होते हैं
हर रंग कुछ कहता है
कुछ हास्य, कुछ लास्य
चंचलता, सौम्यता,
राग-विराग, सुहाग,
ज्ञान-अज्ञान, अभिमान,
बहुत कुछ
अनकहे बहुत कुछ कहता है

प्रवासी

हवाओं ने फिर से कैसी
यह साज़िश रची है,
पेड़ से पत्ता झड़ा
ज़मीं पर गिरा
झोंका आया उड़ा ले गया
दूर जा पड़ा
शाख़ से टूटा, जड़ों से दूर
अलग-थलग
नितांत अकेला
प्रवासी-सा
वतन से दूर,
अपनों से जुदा
सपनों की पिटारी
थामे खड़ा
गाँव-शहर से दूर
अनगिनत पतझड़ों की
उदासी झेलता,
अंतर्मन में खुशियों की-
बसंत तलाशता,
फिर जुड़ने की हसरत
लिए छटपटाता,
बेबस, लाचार, त्रस्त
अंतहीन सफ़र का राहगीर
हर प्रवासी ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

चिता मेरी न आग लगाना

गीता मंजरी मिश्र (सतपथी)

दिल्ली, भारत

चिता मेरी न
आग लगाना
मैं हिन्दू नहीं हूँ,
मुझे सुपुर्द-ए-ख़ाक
ना करना
मैं मुस्लिम नहीं हूँ
चर्च के पीछे कब्र न देना
ईसाई कब रहा हूँ ?
वाहेगुरु नाम संग जाना
चाहा कभी नहीं है
मैं जैन बौद्ध पारसी नहीं,
बैठ शव पर थोड़ी देर
आँखे बंद कर लेना
ढूंढना कोई मानवधर्म
ग्रंथ कहीं मिल पाए
देखना उसमें
अध्याय अंत्येष्टि
तुम्हें नज़र आ जाए ॥
अगर न मिले -
ऐसी कोई राह ले चलना
जिस पथ मेरा जिस्म का ज़र्रा
मानवता का बीज गिराए
आज नहीं तो कल बारिस में
कोई लतर कहीं उग आए

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

क्यों करे गुमान रे बंदे

राजेश भाटिया

मोहाली, भारत

बेटी

एक सुंदर परी का रूप है...बेटी
कड़कती ठंड में सुहानी धूप है...बेटी

पापा के चेहरे की मुस्कान है...बेटी
एक मां का अभिमान है...बेटी

ईश्वर द्वारा रची रचना है...बेटी
किसी की पूजा अर्चना है...बेटी

ससुराल का है श्रृंगार,
मायके की लाज है...बेटी
आने वाला कल,
भारत का आज है... बेटी

बहन, पत्नी, मां, चाची,
मामी और बुआ है..बेटी
जिससे मुख से निकले,
हर पल वो दुआ है... बेटी

हर रिश्ते में ढाले जान वो है...बेटी
आसानी से ना हो कन्यादान वो है..बेटी

क्यों वयर्थ में करे गुमान रे बंदे,
जब करने और कराने वाला वो है ॥

नही बन सकते किसी चेहरे की हंसी,
किसी के रोने का कारण भी मत बन,
लाख कमियां होंगी तुझ में भी तो,
कभी झांक कर देख तू अपना मन,
हर किसी में है उसका वास,
और उसी की जगाई लो है,
क्यों व्यर्थ में करे गुमान रे बंदे,
जब करने और कराने वाला वो है ॥

खाली हाथ आया बंदे, खाली हाथ जाएगा,
कोशिशों के बाबजूद कोई तुझे रोक ना पायेगा,
जिंदगी की क्यारी में जिसने जैसा,
बीजा है बीज, पाया सो है,
क्यों व्यर्थ में करे गुमान रे बंदे,
जब करने और कराने वाला वो है ॥

कर रहा मेरी मेरी, हर बात में है दिखावा,
लोभ और अहंकार को चढ़ा रहा चड़ावा,
भूल बैठा है तू अपने और अपनो को,
हकीकत से दूर , जी रहा सपनों को,
जिंदगी को काटो मत इसको जी लो
असली मजा तो है,
क्यों व्यर्थ में करे गुमान रे बंदे,
जब करने और कराने वाला ही वो है ॥

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

वैसे ही बनी रहेगी

बड़े कलापूर्ण ढंग से
विभाजित किया तुमने
संबंधों को,
यह कहना
उचित न होगा
कि तुम्हीं हो जनक
इस विधा की,
होंगे और भी
जो हुए विलग,
किया होगा किन्हीं
दूसरे विषयों ने आकर्षित,
जिन्होंने किया होगा
तुम्हारे निष्कर्षों को पैना,
फिर भी
इस विश्लेषण में
बना रहेगा अभाव
कि तुम्हारे बिना
और भी विषम
होती रहेंगी परिस्थितियां,
इस विराट दर्शन में
जीवन सम्मान की कमी
वैसे ही बनी रहेगी ।

विजय कपूर

चण्डीगढ़, भारत

अंधेरा लिखता हूं

उसका तो कहना है
दिखो न दिखो
पर तुम हो,
विश्वास हो तो
बना भी रहना चाहिए,
है न यह अजीब रौशनी,
अँधेरा लिखता हूँ
और उसको दिखता हूँ ।

वहीं खड़ा है

जीवन की
अपनी औपचारिकताएं है
और उसे जीने वालों की
अपनी अपनी,
करता है देह बोध का द्वंद्व
कई बार अतिक्रांत
तो हम नक्कारने लगते हैं
बेमेल नुमाइंदगी,
नव चिंतन जनित
अस्वीकृति की धारा के
अविरल वेग में
जो भड़ा है,
वही भड़े के साथ
खड़ा है ।

एहसास भर से

अवशेषों से
सवाल तो उठेंगे
कि कहीं
उधेड़-बुन में ही तो नहीं
उधड़ गए जिस्मों से,
कहीं वो
आत्म मुग्धता में ही तो नहीं
गढ़ते रहे झूठ के सत्य को,
किसी भी किस्म के
अगाध प्रेम के एहसास भर से
बंद हो जाते हैं कपाट
मन मस्तिष्क के,
फिर चाहे
कोई कितना भी
बोले हल्ला ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

मैं नदी हूँ

डॉ० जसप्रीत कौर फ्लक

लुधियाना, भारत

मैं बने बनाये हुये रास्तों पर
नहीं चलती
मुझे आता है राह बनाने का हुनर
मेरा टेढ़ा मेढ़ा और लम्बा है सफ़र
मैं नदी हूँ
मेरा स्वभाव है ख़ामोश रहना
निरंतर बहना-निरंतर बहना
मैं राह के पत्थरों से,
चट्टानों से टकरा के गुज़र जाऊँगी
सूखी धरती मुस्कुरायेगी
मैं जिधर-जिधर जाऊँगी
मेरे अपने हैं उसूल
मैंने महकायीं फ़स्लें, खिलाये हैं फूल
मुझे रोकने की ज़िद न करो
मुझे मोड़ने की ज़िद न करो
मैं हर पेड़ से कह रही हूँ
मैं नि:स्वार्थ बह रही हूँ

मुझमें प्रवाहित हैं मुहब्बत के पुष्प,
आशाओं के दीप
मेरा अपना है रंग, मेरी अपनी है रीत
मुझमें सम्मिलित होती जा रही हैं
बहुत सी दिशायें,
मुझसे खेलती हैं
बहुत सी हवायें
मुझमें डूबती जा रही है
डूबते सूर्य की लाली
मुझे छू रही है झुक कर
नर्म पेड़ की डाली
मैं तृप्त करती जा रही हूँ
अहसास की ज़मीं
मेरी मंज़िल है दूर कहीं-दूर कहीं
मैं चलते चलते समा जाऊँगी
एक दिन
प्रेम के महासागर में...।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

घूमने जा रहे हैं

लघुकथा

विजय कुमार

अम्बाला छावनी, भारत

"आज के अखबार में भी था, कि कल किसी धार्मिक स्थल पर जाते हुए एक कार दुर्घटनाग्रस्त हो गई, और चार लोग मारे गए।" एक ने कहा।

"आजकल तो हर दूसरे-तीसरे दिन इस तरह की खबरें पढ़ने-सुनने को मिल जाती हैं। पता नहीं क्या हो रहा है यह सब कुछ। पिछले कुछ वर्षों से तो बड़े-बड़े धार्मिक स्थलों पर भी बड़े-बड़े हादसे होने शुरू हो गए हैं, जिनमें सैकड़ों-हजारों की संख्या में भी लोग मर जाते हैं।" दूसरे ने कहा।

"सही कह रहे हो। भगवान के नाम से ही भरोसा उठने लगा है अब तो। कलयुग है, भगवान भी भक्तों को अपने पास बुला रहा है।" एक और आवाज आई।

"कभी तुमने सोचने की कोशिश भी की है, कि ऐसा हो क्यों रहा है?" एक चौथी आवाज गूंजी।

"क्या पता? तुम बताओ?" सभी ने एक साथ कहा।

"धार्मिक स्थलों पर पहुंचना पहले इतना सुगम नहीं था। बहुत कष्ट सहन करके लोग जाते थे, इसलिए बहुत कम लोग जाते थे। उस समय भी लोग मरते थे, पर किन्हीं और कारणों से, हादसों से नहीं। पर अब लोगों को ऐसी जगहों पर सब तरह की सुख-सुविधाएं और ऐशो-आराम मिल रहा है, तो भीड़ की भीड़ वहां जा रही है। अब इतनी भीड़ और इतना तामझाम होगा, तो दुर्घटनाएं तो होंगी ही ना। भगवान जी भी बेचारे क्या करें? पहले लोग कहते थे- 'दर्शन करने जा रहे हैं।' उसे सबका ध्यान रखना पड़ता था, उसकी जिम्मेदारी जो बनती थी। पर अब ऊपर वाला भी क्या करे, और क्यों करें, किस-किस का ख्याल रखे। जिसे देखो वही उठ कर चल देता है। और क्या कहता है पता है- 'घूमने जा रहे हैं'...।"

मैं स्त्री हूं

डॉ0 उमा त्रिलोक

मोहाली, भारत

दहेज में मिला है मुझे
एक बड़ा संदूक हिदायतों का
आसमानी साड़ी में लिपटा हुआ संतोष
सतरंगी ओढ़नी में बंधी सहनशीलता
गांठ में बांध दिया था मां ने
आशीष,
"अपने घर बसना और...
विदा होना वहीं से"

फिर चलते चलते रोक कर कहा था
"सुनो,
किसी महत्वाकांक्षा को मत पालना
जो मिले स्वीकारना
जो ना मिले
उसे अपनी नियति मान लेना
बस चुप रहना
सेवा और बलिदान को ही धर्म जानना "
और
कहा था
"तेरी श्रृंगार पिटारी में
सुर्खी की जगह
लाल कपड़े में बांध कर मैंने
रख दिया है
"मीठा बोल"
बस उसे ही श्रृंगार मानना
और
चुप रहना

मां ने इतना कुछ दिया
मगर भूल गई देना मुझे
अन्याय से लडने का मंत्र
और
मैं भी पूछना भूल गई
कि
यदि सीता की तरह, वह मेरा
परित्याग कर दे
तो भी क्या मैं चुप रहूं

और यदि द्रौपदी की तरह
बेइज्जत की जाऊं
क्या, तो भी

क्या,
दे दूं उसे हक
कि
वह मुझे उपभोक्ता वस्तु समझे
लताड़े ,मारे, प्रताड़े

क्या
उसके छल कपट को अनदेखा कर दूं
समझौता कर लूं
उस की व्यभिचारिता से
पायेदान की तरह पड़ी रहूं
सहती सब कुछ
फिर भी ना बोलूं
अन्याय के आगे
झुक जाऊं

मां
अगर ऐसा करूंगी तो फिर किस
स्वाभिमान से
अपने बच्चों को
बुरे भले की पहचान करवाऊंगी
किस मुंह से उन्हें
यातना और अन्याय के आगे
न झुकने का पाठ पढ़ाऊंगी

मां

मुझे अपनी अस्मिता की
रक्षा करनी है

सदियों से
स्त्री का छीना गया है हक
कभी उसके होने का हक
कभी उसके जीने का हक
बस अब और नहीं

अब तो उसने
विवशता के बंधनों से जूझते जूझते
गाड़ दिए हैं
अनेकों झंडे
लहरा दिए हैं
सफलताओं के कई परचम

मां
अब तो कहो मुझ से
कि कोशिश करूं मैं
सृष्टि का यह विधान

क्यों कि नहीं जीना है मुझे
इस हारी सोच की व्यथा के साथ
मुझे जीना है
हंस ध्वनि सा
गुनगुनाता जीवन
गीत सा लहराता जीवन

मैं स्त्री हू

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

स्पैशल फीलिंग

लघु कथा

विमला गुगलानी

चण्डीगढ़, भारत

'आजकल ये नया ही फैशन चल गया है, हर रोज कुछ न कुछ मनाने का, कभी योगा डे, कभी हैल्थ डे, पर्यावरण तो कभी साईकल डे, तो कभी रोज डे' उहं, कोई काम नहीं लोगों को, अखबार परे फेंकती हुई सौदामनी जैसे चिढ़ कर बोली।

रसोई का काम निपटाते हुए भी उसके दिमाग में वही घूम रहा था। उसके दो बेटे थे। आज की तेज रफ्तार जिंदगी में सब अपने अपने कामों में व्यस्त थे। जब बच्चे छोटे थे तो कितने चाव से सौदामनी उनका जन्मदिन मनाती। पैसों की तंगी के चलते पति सोमेश केक की जगह चार छः पेस्ट्रियां ले आते और सौदामनी उन्हें ही जोड़कर केक की शक्ल दे देती। अपने जन्मदिन या एनवरसरी पर वो केक की जगह मूंग दाल का हलवा बनाती। समझ आने पर आर्थिक स्थिति ठीक न होने पर भी बच्चों को दोस्तों के साथ मौज मस्ती के लिए पैसे देने पड़ते। धीरे धीरे बच्चे बड़े होकर अपनी अपनी दुनिया में व्यस्त हो गए। रह गए सौदामनी और सोमेश। खतों का जमाना कब का जा चुका, कभी कभार बच्चों का फोन आता तो वो भी किसी काम से। वैसे सब ठीक था परंतु किसी को ममी पापा का जन्मदिन या एनवरसिरी याद नहीं थी। सोमेश के मन की थाह पाना कठिन था, मगर सौदामनी का जी चाहता कि उसे भी जन्मदिन पर या मदर डे पर कोई विश करे। फेस बुक पर, वाटस एप गरूपों पर बधाईयों का तांता लगा होता। यहां तक कि बैंकों और बीमा कंपनियों के भी मैसेज आते, पर अपनों का इंतजार ही रह जाता। पता नहीं कमी कहां रह गई।

इधर सौदामनी और सोमेश के पास अब न समय की कमी थी और न पैसों की, कमी थी तो बच्चों के साथ की। चलो मजबूरियों के चलते मिलना न भी हो तो भी आजकल तो बहुत साधन है दूरियां मिटाने के। मदर, फादर डे, जन्मदिन आते, निकल जाते। अब सौदामनी का दिल करता कि कोई उसे भी विश करे, उसने कई बार बातों बातों में जिक्र भी किया, मगर कुछ असर नहीं। सौदामनी ने भी अपने मन को समझा लिया" छोड़ो, क्या फर्क पड़ता है, फालतू के चोंचले" आदर तो मन में होना चाहिए, मगर' दिल है कि मानता नहीं', कहीं से इक हूक सी उठती। आज सौदामनी का जन्मदिन और फादर डे दोनों ही थे। अखबारों और मोबाईल पर यही विषय मुख्य था।

रोज की तरह नाशते से फरी होकर सौदामनी और सोमेश मोबाईल खोल कर बैठ गए, जन्मदिन के बहुत सारे मैसेज थे। अचानक उसकी भानजी रिचा का अमेरिका से मैसेज आया 'हैपी बर्थ डे मा-सी' और सोमेश को' हैपी फादर डे'

रिचा सौदामनी की छोटी बहन की बेटी थी जिसे सौदामनी ने अपनी बेटी सा ही प्यार दिया। दोनों ने मुस्कराते हुए एक दूसरे के आगे अपना मोबाईल कर दिया। कभी इन सब को समय की बरबादी और दकोसला समझने वाली सौदामनी को आज स्पैशल फीलिंग आ रही थी।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

अपना वतन

डॉ० उमा शर्मा

मोहाली, भारत

जन्नत बन जाए अपना वतन
मिल जुल के करें कुछ ऐसा जतन
सब शाद रहे आबाद रहे, रन्जो गम से आज़ाद रहे ।
न जुल्म किसी मज़लूम पे हो, गुलशन से परे सैय्याद रहे ।
हर दिल हो मुहब्बत का दर्पण
जन्नत बन जाए अपना वतन

हर ठौर ही ठौरे हरियाली हर सिमत फज़ा हो मतवाली
हर दिल में मुर्सरत की ईदें, घर-घर में हो जश्ने दीवाली
खुशियों से भरा हो आंगन
जन्नत बन जाए अपना वतन

काले धन का व्यापार न हो, रिश्वत का गर्म बाज़ार न हो
फिर अपने वतन में हर कोई जीने से कभी बेज़ार न हो
नीलाम न हो असमत का चलन
जन्नत बन जाए अपना वतन

न ऊंच नीच के झगड़े हों, न भेदभाव के रगड़े हों
सब एक रहें भारतवासी, न दीन-धर्म के झगड़े हों
हर धर्म का हो उपदेश अमन
जन्नत बन जाए अपना वतन

सच्चाई से फर्ज़ निभाएं हम, जब आगे कदम बढ़ाएं हम
सारे ही जहां में भारत का, सदियों तक नाम जगाएं हम
जय भारत मां-जय गंगो जमन
जन्नत बन जाए अपना वतन ।

न जवां हो ए कली

न जवां हो ए कली
वरना कुचल दी जायेगी
बे आबरू करके चमन से
तू निकाली जायेगी
या कहीं बेदर्द हाथों से
कुचल दी जायेगी
या कहीं टूटे मज़ारों पर
चढ़ा दी जायेगी
हंस रही है किसलिये
तू आगाज़ को
सुन ले ए नाज़ुक कली
सुन ले मेरी आवाज़ को
अन्जाम है अर्थी की
तू ज़ीनत बना दी जायेगी
महफूज़ है जब तक चमन में
तू नहीं होती जवां
वरना तुमको तोड़ लेगा
यह फरेबी बागवां
तेरी जवानी ए कली
तुमको मिटा कर जायेगी
यह माना कि गले का
हार बन सकती है तू
चंद घड़ियों के लिये
शाहकार बन सकती है तू
पर बू निकल जाने पर
तू गलियों में रौंदी जायेगी
न जवां हो ए कली
वरना कुचल दी जायेगी ।

ग़ज़लें

साहिल

दिल्ली, भारत

दो दिन की जिंदगानी और सामान उम्र भर का
एक पल का नहीं भरोसा अरमान उम्र भर का।

ये वक्त की सराय एक दिन है सबको जाना
यहाँ कोई भी नहीं है मेहमान उम्र भर का।

कुछ रोज़ जहाँ ठहरे अपना था घर बनाया
वो किराये का था कमरा ना मकान उम्र भर का।

है इश्क जो खुदा से तो प्रीत तुम लगा लो
रकीब है ज़माना रख ध्यान उम्र भर का।

बीज भी है बोना और हल भी है चलाना
आखिर है तू बंदे किसान उम्र भर का।

क्यों नफ़रत को दिल में पाला हुआ है तुमने
इससे तुम्हें ही होगा नुकसान उम्र भर का।

दिल तोड़ के किसी ने शायर बना दिया था
'साहिल' को याद है वो एहसान उम्र भर का।

हक़ीक़त पर फ़सानों के पहरे हैं
हर इंसान के एक से ज़्यादा चहरे हैं।

जिस्म के ज़ख्म तो कुछ भी नहीं
दिल के नासूर इनसे ज़्यादा गहरे हैं।

घर तो अब घर रहे ही नहीं
ऐसा लगता है मानों रैन बसेरे हैं।

वचन तो उसका एक भी याद नहीं
कहने को लिए पूरे सात फेरे हैं।

प्यार का पंछी तो कब का उड़ चुका
दो दिलों में आज बस तन्हाई के डेरे हैं।

अंधेरों में काबिज़ आज है भले ही
कल के फिर भी ख्वाब सुनहरे हैं।

वो बहे तो सैलाब यकीनन आयेगा 'साहिल'
आँसू जो अभी तक आँखों में ठहरे हैं।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

गिलहरी

डॉ० गीता गंगोत्री

झारखंड, भारत

ढूंढती रही इक गिलहरी,
खुद को खबर में,
पर कहां थी वो,
किसी की नजर में,
मिले थे कुछ प्रशंसाओं के पुष्प,
आश्वासन के उजाले,
उम्मीदों की लकीरें,
मिले थे शिखर से ऊंचे,
कद वाले नए दोस्त,
और गिलहरी उन्हें आज तक,
समेट रही है, बांध रही है, सहेज रही है ।
गुनगुना रही है, लिख रही है,
संवार रही है उस मिठास से
खुरदरी, लकीरहीन, तकदीर,
बना रही है तिनकों का एक पुल,
तैयार कर रही उन्हीं खबरों से,
हौसलों की श्री कुटी,
भर रही है उसमें खुशियों के,
छोटे छोटे महीन दानें,
बना रही है अपने लिए,
छोटी ऊंची मचान,
जहां से देख सके वो सबको,

निहार सके दूर दराज के रास्ते ।
अथक, अनवरत, संघर्षरत,
दौड़ती, फुदकती, ऊंचे पेड़ों को,
लांघती, पछाड़ती, उतरती,
हिम्मती अनुभवी गिलहरी,
नहीं भूलेगी कभी आश्वासन के,
अमिट, अभेद, अदृश्य वो बल,
गुनगुनाती बिखेरती रहेगी,
फिजाओं में खुशबू,
भरती रहेगी काले कैनवास पे रंग,
छिड़कती रहेगी गुलाब गेंदा,
के इत्र चहूं ओर,
बसाती रहेगी वृन्दावन,
उगाती रहेगी सूरज,
बजाती रहेगी,
यूं ही शांत धीमे धीमे,
सबकी खुशियों में,
ढोल मृदंग, पखावज ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

जीवन एक संग्राम

डॉ० निशा भार्गव

चण्डीगढ़, भारत

फूलों की सेज ही नहीं, जीवन एक संग्राम भी है
हादसों भरी ये राह मुश्किल भी आसान भी है।

इस राह में कभी काँटे कभी फूल खिलते हैं।
कभी कुछ अच्छे तो कभी बुरे लोग मिलते हैं।

कुछ रिश्ते तो मिल कर रूह को सुकून देते हैं।
किसी लक्ष्य के लिए मर मिटने का जुनून देते हैं।

और कुछ रिश्ते यहाँ सिर्फ़ दर्द-ओ-ग़म देते हैं
जिस्म के साथ-साथ रूह को भी ज़ख्म देते हैं।

कुछ घर में रह कर अपनों पे ही वार करते हैं।
आदमी क्या इनसानियत को शर्मसार करते हैं।

कोई समझे न समझे ऊपर वाला समझता है
वक्त आने पर वो सबका हिसाब करता है।

जिसने जीवन दिया है वही राह दिखाता है
अच्छा बुरा फल सबको यहीं मिल जाता है।

जीवन संग्राम में कभी जीत तो कभी हार है
निज कर्म करते रहना ही जीवन का सार है।

दोस्ती

जाने क्यों आजकल कुछ नाराज़ है मुझ से
आओ अपने रूठे हुए दोस्त को मनाया जाए।

कहता है वो मसरूफ है किसी काम में अभी
किसी बहाने उसे अपने पास बुलाया जाए।

गुज़रता वक्त कहीं उसको बेपरवाह न कर दे
उसे अपने जज़्बात का अहसास कराया जाए।

ऐसा न हो ग़लत फ़हमी की दीवार बड़ी हो जाए
कुछ उसकी सुन कुछ अपना हाल सुनाया जाए।

दोस्ती की अहमियत से वो वाकिफ़ नहीं शायद
उसे ये रिश्ता निभाने का अंदाज़ सिखाया जाए।

इस ज़माने की खायतें हमें रास नहीं आएँगी
दोस्तों के साथ एक अलग संसार बसाया जाए।

आजकल अच्छे दोस्त कहाँ मिलते हैं जनाब
इस नायाब रिश्ते को हर हाल निभाया जाये।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

पिज़्ज़ा कल्चर

निर्लेप होरा

दिल्ली, भारत

पिज़्ज़ा कल्चर तूने किया कमाल
कैसा बिछाया अपना जाल
बर्गर तू भी कम नहीं
बस अब आलू की टिक्की में दम नहीं
चाट-पकोड़ी तो हिंदी भाषी खाये
पढ़े-लिखे को चाइनीज़ भाये
सब्ज़ी-दाल का दौर पुराना
अब तो फ़ास्ट फ़ूड का ज़माना
युवक वर्ग का मंदिर पब है
मिलता उनको वहीं पे रब है
अर्धनग्नता में फैशन समाया
उतने मॉडर्न, जितनी उघाड़ो काया
मॉरल पुलिस क्यों आंखे दिखाए
करेंगे वैसा जैसा हमें भाये
गुरुद्वारे, मंदिर क्यूँ कर जाएं
मोबाइल से क्यों न दिल बहलायें
पैसा कमाएं, मौज उड़ाएं
भ्रष्टाचार को गले लगाएं
ईमानदारी, सच्चाई खोखली बातें
कौन जोड़ें इनसे नाते

ब्यूटी-कंटिस्ट दिलाये शौहरत
मॉडलिंग भी दिलाये दौलत
दोनों का संगम करे कमाल
कम समय में हो जाएं माला-माल
भारतीय संस्कृति का जो रोना रोये
हमारा क्या बिगड़े अपना कुछ खोये
नहीं जानते ज़माना बदल गया है
बेटा अब बाप बन गया है
संस्कार, लोक लाज पुराने हो गए हैं
इक्कीसवीं सदी में बेगाने हो गए हैं
नए युग में करें नई बातें
स्वार्थ हो पूरा, भूलें रिश्ते-नाते
मनुष्य जीवन क्यूँ व्यर्थ गवाएं
लोगों की सेवा में क्यों तन गवाएं
बड़ों को आदर छोटों को प्यार
हटाओ यह रूढ़िवादी विचार
कर्तव्य के बंधन हमें न भाएँ
स्वछंदता से क्यों न जीवन बिताएं
स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार
इस मूलमन्त्र से हमें है प्यार।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

जानवर बनता इंसान

प्रेम विज
चण्डीगढ़, भारत

मोहल्ले में
अचानक
लोगो के शोर को
सुन सुन
बिस्तर पर लेटे
पापा ने कहा
बाहर देखो
कैसा शौर है
कैसा दर्द है
अपने दर्द के बिना
दूसरो का भी
महसूस किया करो

अनमने मन से
पांवो बाहर की ओर
चल पड़े
देखता हूं
गंदगी के ढेर के पास
लोगो की भीड़ थी
लाठियों से
कुत्तों को
भगाया गया
मुंह में पकड़ा
मांस का लोथड़ा
छुडवाया गया ।

इतने में
हार्न बजाती
पुलिस पहुंच गई
उस बच्ची के
लोथड़ो को एकत्रित कर
ले गई ।

भीड़, बाजार गलियों में
समा गई और
मैं
दबे पांव
घर लौट
आता हूं
पापा के पास
नहीं
अपने पास
सोचने लगता हूं
कि माया जाल
के लालच में
इंसान को
जानवर
बना दिया है ।

कवितावली